जून 2018

# दादावाणी

Retail Price ₹ 15

ब्रह्मांड में जो ग्रह हैं, वे हमारे अंदर ही हैं। ये नौ ग्रह आपके शरीर में ही हैं। हमारे ही ग्रह हमें रुकावट डालते हैं। पूर्वाग्रह, वह तो बहुत बड़ा ग्रह है।

संपादक : डिम्पल महेता
वर्ष : 13 अंक : 8
अखंड क्रमांक : 152
**जून 2018**

**संपर्क सूत्र :**
**त्रिमंदिर,** सीमंधर सिटी,
अहमदावाद-कलोल हाइ-वे,
पो.ओ.: **अडालज**,
जि.: गांधीनगर-382421.
**फोन :** (079) 39830100
email: dadavani@dadabhagwan.org
**www.dadabhagwan.org**
दादावाणी संबंधी शिकायत के लिए:
8155007500

**Editor : Dimple Mehta**
**Printed & Published by**
**Dimple Mehta on behalf of**
**Mahavideh Foundation**
Simandhar City, Adalaj
Dist-Gandhinagar - 382421
**Owned by**
**Mahavideh Foundation**
Simandhar City, Adalaj
Dist-Gandhinagar - 382421
**Printed at**
**Amba Offset**
B-99, GIDC, Sector-25,
Gandhinagar – 382025.
**Published at**
**Mahavideh Foundation**
Simandhar City, Adalaj
Dist-Gandhinagar - 382421
**Total 36 pages including cover**

**सबस्क्रिप्शन ( सदस्यता शुल्क )**
**15 साल**
भारत : 1500 रुपये
यू.एस.ए. : 150 डॉलर
यू.के. : 120 पाउन्ड
**वार्षिक**
भारत : 150 रुपये
यू.एस.ए. : 15 डॉलर
यू.के. : 12 पाउन्ड
भारत में D.D./M.O.
'महाविदेह फाउन्डेशन' के नाम से
संपर्कसूत्र के पते पर भेजें।

# दादावाणी

## प्रेजुडिस, कितना जोखिम भरा !

### संपादकीय

जन्मकुंडली में तो नौ ग्रहों का ही साम्राज्य चलता है लेकिन क्या वास्तव में मनुष्य उन ग्रहों से ग्रहित हैं? वे ग्रह हमें बाधक क्यों होगें? हमने उनका क्या बिगाड़ा है कि वे हमें बाधक होंगे? वास्तव में तो अंदर वाले नौ ग्रह जैसे कि आग्रह, दुराग्रह, मताग्रह, मिथ्याग्रह, हठाग्रह, कदाग्रह, सत्याग्रह, परिग्रह और पूर्वाग्रह ये सभी बाधक हैं।

ये आकाश वाले ग्रह तो एक निश्चित समय पर ही बाधक होते हैं जबकि मनकुंडली में मात्र एक ही ग्रह ऐसा है कि जो अन्य ग्रहों से भी ज़्यादा बाधक है, वह है 'पूर्वाग्रह'। किसी चीज़, संयोग या व्यक्ति के लिए हम, सुनी हुई, पढ़ी हुई वास्तविकता की जाँच-पड़ताल किए बिना ही अभिप्राय बना लेते हैं। वे धीरे-धीरे पूर्वाग्रह में बदल जाते हैं। ऐसे पूर्वाग्रह फिर कुंडली वाले ग्रहों से भी ज़्यादा विकराल परिणाम देते हैं।

किसी व्यक्ति के लिए हमेशा एक ही तरह का ओपिनियन (अभिप्राय) रखना प्रेजुडिस कहलाता है। यानी कि अभिप्रायों का गुणाकार। पूर्वाग्रह एक प्रकार का द्वेष है। वह पाप बंधन करवाता है इसलिए बहुत जोखिम भरा है। प्रेजुडिस आगे चलकर शंका में परिणामित होता है। शंका बहुत बड़ी निर्बलता है, आत्मघाती है। शंका होते ही सामने वाले से जुदाई हो जाती है। अभिप्राय तंतीली वाणी का कारण है जबकि शंका प्रेजुडिस का कारण है।

यहाँ पर परम पूज्य दादा भगवान (दादाश्री) द्वारा उद्‌बोधित प्रेजुडिस से संबंधित वाणी का संकलन हुआ है। जिसमें प्रेजुडिस के अर्थ, उसके होने के कारणों, सामने वाले पर उसका असर, उसके जोखिम, उनमें से छूटने के उपाय वगैरह सभी का गहराई से विश्लेषण हुआ है। इस प्रेजुडिस की वजह से ही संसार कायम है। दादा कहते हैं कि पुराना जजमेन्ट छोड़ दो, वह तो बदलता ही रहता है। अगर चोर हमारे सामने चोरी करे, तब भी उसके प्रति पूर्वाग्रह रखना गुनाह है। यह तो बहुत सूक्ष्म साइन्स है।

पूरा संसार प्रेजुडिस में ही है, एक क्षण भी होश नहीं है, बेहोश अवस्था में रहता है। इस पूर्वाग्रह की वजह से ही तो संसार मार खाता है और उसके कारण दोष लगते हैं इसीलिए तो ये दु:ख हैं न। वर्ना, वर्ल्ड में दु:ख क्यों होते?

भगवान ने कहा है, 'जिसमें खुद में कोई ग्रह नहीं है, उस पर बाहर के ग्रह क्या असर डाल सकते हैं?' अब ज्ञान प्राप्ति के बाद मोक्षमार्ग में आगे बढ़ने के लिए महात्माओं का जीवन पूर्वाग्रह रहित हो जाए तभी कल्याण होगा और मोक्ष के अंतराय टूटेंगे। सभी महात्मागण जागृतिपूर्वक, पुरुषार्थ द्वारा पूर्वाग्रह रहित जीवन से, परमात्मा पद की तरफ कदम बढ़ाएँ, यही अभ्यर्थना।

**जय सच्चिदानंद**

## पाठकों से...

'दादावाणी' सामायिक में मुद्रित पाठ्य सामग्री मूलत: गुजराती 'दादावाणी' का हिन्दी रूपांतर है। कोष्ठक में दिए गए शब्द या तो अंग्रेज़ी शब्द का अर्थ हैं अथवा शब्द का तात्पर्य स्पष्ट करने हेतु वृद्धित किए गए वाक्यांश है। यहाँ पर 'आत्मा' शब्द को गुजराती और संस्कृत की तरह पुल्लिंग में प्रयोग किया गया है। जहाँ पर भी 'चंदूभाई' नाम का प्रयोग हुआ है, वहाँ पर पाठक खुद को समझें। 'दादावाणी' के इस अंक में अगर आप कोई बात न समझ पाएँ तो प्रत्यक्ष सत्संग में पधारकर समाधान प्राप्त करें। अनुवाद में कोई कमी नज़र आए तो हमें सूचित करने की कृपा करें, ताकि भविष्य में सुधार किया जा सकें । ऐसी क्षतियों के लिए हम आपके क्षमाप्रार्थी है।

# प्रेजुडिस, कितना जोखिम भरा !

### जीवन पर ग्रहों का असर

**प्रश्नकर्ता :** मानव जीवन पर ग्रहों का क्या असर होता है?

**दादाश्री :** वे जो ग्रह हैं न, वे तो अपने स्वभाव में ही हैं लेकिन अपने भीतर जो ग्रह हैं न, उनका यह असर है। ये ग्रह और वे ग्रह, सभी तार से जॉइन्ट हैं।

ग्रह अर्थात् जैसे गुनाह करने पर हमें पुलिस वाला पकड़ता है, उसी तरह पिछले जन्म में जो गुनाह हुए हैं, उनके हाथ लगने पर वे फल देते हैं। ग्रहों का और हमारा क्या लेना-देना? भगवान ने भी कहा है कि, 'जिसमें खुद में ग्रह नहीं हैं उस पर बाहर का ग्रह क्या असर डालेगा?' तब कहते हैं, 'मनुष्य बिना ग्रह वाले तो हो ही नहीं सकते न? तब कहते हैं, 'हमारे यहाँ ग्रह रहित तीर्थंकर हो चुके हैं।' अरे, रावण बिना ग्रह रहित के थे। 'कैसे थे रावण? शास्त्रवेत्ता सभी नौ ग्रह उनके पास ही रहते थे।' ग्रह पुलिस वाले की तरह उनके पास रहते थे। हम में वे ग्रह नहीं हैं तो हमें कितना मज़ा आता होगा? हम में ग्रह हैं ही नहीं।

### हमारे ग्रह ही हमें बाधक हैं

**प्रश्नकर्ता :** कभी-कभी ऐसा कहते हैं कि शनि ग्रह बाधक है, मंगल बाधक है तो ग्रहों का जो ऐसा असर है, वह सब क्या है?

**दादाश्री :** ऐसा है न, ग्रह कब तक बाधक हैं? जब तक आपमें ग्रह हैं, तभी तक वे ग्रह बाधक हैं। अगर आपके ग्रह चले जाएँगे तो उसके बाद वे ग्रह भी आपमें बिल्कुल भी नहीं रहेंगे। अब आपको बताता हूँ कि आपमें कौन-कौन से ग्रह हैं, देखो, मताग्रह, कदाग्रह, सत्याग्रह, आग्रह, पूर्वाग्रह, परिग्रह, दुराग्रह, हठाग्रह और मिथ्याग्रह ये नौ ग्रह आपके शरीर में ही हैं।

**प्रश्नकर्ता :** ऊपर वाले ग्रह बाधक नहीं हैं?

**दादाश्री :** ऊपर वराले कोई भी ग्रह बाधक नहीं हैं। वे बेचारे देवियों वाले हैं, उनकी देवियाँ हैं। वे यहाँ लोगों से लड़ने क्यों आएँगे? वे ऊपर वाले ग्रह, शनि का ग्रह, शुक्र का ग्रह! जो ग्रह ब्रह्मांड में हैं, वही के वही ग्रह अपने भीतर पिंड में भी हैं। तो अपने वे ग्रह ही हमें बाधक हैं। यदि हठाग्रह हो जाए तो समझ जाना कि शनि ग्रह बाधक है। भीतर शनि ग्रह है। अभी उसका अमल हो रहा है।

अब, उन ग्रहों का कैसा है? यदि आपमें ग्रह हैं तो उन ग्रहों से तार जॉइन्ट रहता है। ग्रह आपको बाधक नहीं हैं। आपका गुनाह ही आपको बाधक है। गुनाह किया होगा न, तभी पुलिस उसे पकड़ती है। उसे ऐसा कुछ नहीं है कि इसी को

पकड़ो। उसे तो अपना फर्ज़ निभाना है उसी प्रकार इन ग्रहों को भी अपना फर्ज़ निभाना होता है। इसलिए जब आप में से ग्रह चले जाएँगे तो लोग आपका नाम भी नहीं देंगे।

## सब से बड़ा ग्रह, पूर्वाग्रह

**प्रश्नकर्ता :** क्या पूर्वाग्रह भी ग्रह ही कहलाएगा?

**दादाश्री :** वह तो बहुत बड़ा ग्रह है। पूर्वाग्रह तो सब से बड़ा है। उसका अंग्रेजी शब्द 'प्रेजुडिस' है।

सभी ग्रह, बोरिया-बिस्तर लेकर चले जाएँ, तब भी पूर्वाग्रह कहेगा, 'अभी मुझे ज़रा देर लगेगी?' वे सभी बोरिया-बिस्तर लेकर चले जाएँ फिर भी इसे शर्म नहीं आती। हम कहें कि 'ये सब बोरिया-बिस्तर लेकर जा रहे हैं, तू भी चला जा न! अंत में तेरी इज़्ज़त नहीं रहेगी। इन सभी की इज़्ज़त चली गई इसी तरह से तेरी भी चली जाएगी। तब कहता है, 'भले ही इज़्ज़त चली जाए लेकिन वे कोई और हैं जो घर वगैरह छोड़ दें। वे अलग हैं।'

## पहचानिए पूर्वाग्रह को

**प्रश्नकर्ता :** अब यह प्रेजुडिस क्या है?

**दादाश्री :** वह भी एक प्रकार का अभिप्राय ही है। एक व्यक्ति के लिए एक ही प्रकार का ओपिनियन (अभिप्राय) रखना प्रेजुडिस कहलाता है।

प्रेजुडिस किसे कहेंगे? मान लो एक व्यक्ति आज जेब में से डेढ़ सौ रुपए ले गया। घर के लोग कहेंगे कि 'वह आदमी हाथ डाल रहा था,' तो हमें पता चल जाता है। फिर जब दूसरे दिन वह व्यक्ति आए, तब आप उसके बारे में जो ओपिनियन दोगे, वह प्रेजुडिस कहलाएगा।

## अभिप्राय का गुणाकार ही प्रेजुडिस

**प्रश्नकर्ता :** वह जो प्रेजुडिस है, वही अभिप्राय है न?

**दादाश्री :** नहीं! वे दोनों ज़रा अलग चीज़ें है। प्रेजुडिस में तो अभिप्राय का गुणाकार हो चुका है। मल्टिप्लिकेशन (गुणाकार) होने पर, वह अभिप्राय कहलाता है।

**प्रश्नकर्ता :** पूर्वाग्रह और अभिप्राय, दोनों में क्या अंतर है?

**दादाश्री :** पूर्वाग्रह के कारण गलत अभिप्राय दे देते हैं जबकि अभिप्राय वास्तव में किसी तथ्य पर आधारित है।

**प्रश्नकर्ता :** अभिप्राय और प्रेजुडिस के बीच में तात्त्विक रूप से क्या अंतर है?

**दादाश्री :** इनमें ज़्यादा अंतर नहीं है। वह जो अभिप्राय बनाते हैं न, वही प्रेजुडिस है। अभिप्राय तो हम बनाते हैं न, कि 'आज कढ़ी खारी है।' उसे अभिप्राय देना कहते हैं। कल वैसा नहीं देंगे। अगली बार खाने से पहले वैसा अभिप्राय नहीं देंगे जबकि प्रेजुडिस का मतलब तो अगर अगले दिन भी वह वैसा ही माने तो वह प्रेजुडिस कहलाएगा। दूसरे दिन, तीसरे दिन, अंत तक।

## ओपिनियन और प्रेजुडिस की भेदरेखा

**प्रश्नकर्ता :** अभिप्राय और पूर्वाग्रह दोनों को ज़रा उदाहरण देकर समझाइए कि अभिप्राय किसे कहेंगे और पूर्वाग्रह किसे कहेंगे?

**दादाश्री :** यदि कढ़ी वास्तव में खारी हो

और हम उसे खारी कहें तो उसे अभिप्राय कहेंगे। और यदि हमें पत्नी के बारे में पूर्वाग्रह हो गया हो कि 'यह खाना कभी भी अच्छा नहीं बनाती।' तब फिर हम कहते हैं कि 'अरे! यह कढ़ी... इस कढ़ी में ज़रा भी बरकत नहीं है। आपकी किसी भी चीज़ में बरकत नहीं है तो उसे पूर्वाग्रह कहेंगे।

**प्रश्नकर्ता :** दोनों में से ज़्यादा नुकसानदेह कौन सा है?

**दादाश्री :** पूर्वाग्रह।

**प्रश्नकर्ता :** अब, पूर्वाग्रह से क्या नुकसान है और अभिप्राय से क्या नुकसान है?

**दादाश्री :** पूर्वाग्रह तो पाप बंधवाता है।

**प्रश्नकर्ता :** और अभिप्राय?

**दादाश्री :** अभिप्राय तो जिसके लिए हम जैसा अभिप्राय देते हैं उसका हमें दोष लगता है लेकिन पाप नहीं लगता। पूर्वाग्रह में जिसकी वजह से पूर्वाग्रह है, उसके प्रति एक प्रकार का द्वेष है इसलिए वह तो बहुत जोखिम वाला है। महात्माओं में पूर्वाग्रह नहीं होना चाहिए।

## पूर्वाग्रह मत रखना

**प्रश्नकर्ता :** पूर्वाग्रह, अभिप्राय का परिणाम है न?

**दादाश्री :** मान्यता का। मान लो जब ये सज्जन तीस साल के थे, तब कभी किसी की जेब में से पैसे निकाल लिए होंगे फिर दोबारा जब वे अपने घर आएँ, तब उन्हें चोर नहीं कहेंगे, चोर मानेंगे भी नहीं।

**प्रश्नकर्ता :** शायद वह पूर्वाग्रह सही न भी हो, गलत भी हो सकता है।

**दादाश्री :** अगर वह सही हो तो भी क्या और गलत हो तो भी क्या? हम कैसे मान सकते हैं? भगवान ने मना किया है, प्रेजुडिस मत रखना कि 'यह ऐसा ही है', इस प्रकार से मत मानना। हमने किसी के लिए भी ऐसा नहीं माना है।

**प्रश्नकर्ता :** ऐसा नहीं मानना तो बड़ी महानता है न! वह तो बहुत महत्वपूर्ण चीज़ हो गई।

**दादाश्री :** वह तो ज्ञान का प्रताप है न! ज्ञान होगा तभी ऐसा रहेगा न? लेकिन यदि हमारे कहे अनुसार, आप उसे वैसा (चोर) नहीं मानोगे तो आपका कल्याण हो जाएगा। आप वैसा मत मानना। वह तो कर्म के अधीन है, इसमें उसका गुनाह नहीं है।

भले ही यहाँ पर तीन चोर बैठे हुए हों लेकिन अगर अपना कुछ जाना होगा तभी जाएगा न। वर्ना नहीं जाएगा न! आपको घबराने की कोई ज़रूरत नहीं है।

## मानते हैं दंड, निकलता है रिफन्ड

मैं एक व्यक्ति के यहाँ गया था। वह कहने लगा, 'दादाजी 'रोज़ यह झंझट होती है!' तब मैंने पूछा, 'क्या है भाई? यह झंझट किसलिए?' 'इन्कमटैक्स वाला चिठ्ठी देने आता है। अब क्या वह चिठ्ठी देने नहीं आएगा बेचारा?' वह वीतराग होगा या राग-द्वेष वाला? क्या उसके पास देने का अधिकार है? वह तो, जिसका हो, उसे पहुँचा देता है, उसके साथ क्या झंझट करनी? तब वह कहने लगा, 'यह अभी वापस गया। अगर वह नहीं आया होता तो मुझे शांति थी। अभी खाना खाने जाना है। अब मुझे खाना भी नहीं भाएगा।' अरे! लेकिन चिठ्ठी तो ले ले और देख कि अंदर

क्या है? भेजने वाले का क्या दोष है वह देख और तेरा क्या दोष है, वह देख, उसके बाद न्याय करना! तब कागज़ खोलकर देखा तो रिफन्ड निकला!

देखो न, इन्कमटैक्स वाले को गालियाँ दी लेकिन रिफन्ड निकला! उसने समझा कि साहब का जुर्माना आया होगा और निकला रिफन्ड! क्या इन्कमटैक्स ऑफिसर को आप पर जुर्माना लगाने का अधिकार है? तब कहते हैं, 'दिखने में तो अधिकार दिखाई देता है' लेकिन वह भी कर्म के अधीन है। यदि आपका हिसाब होगा तभी वह दंड दे सकेगा।

## क्या माना हुआ गलत हो सकता है?

कोई व्यक्ति दो-तीन बार किसी दूसरे व्यक्ति से पैसे उधार लेने जाए और यदि चौथी बार वह व्यक्ति उसी के घर में जाए तो घर में घुसते ही, अभिप्राय की वजह से वह मन में समझ जाता है कि 'यह फिर से लेने आ गया।' अब, उस समय वह क्या करने आया था? 'चलो, मेरे चाचा ने आपको खाने पर बुलाया है।' अब, वह हमें खाने पर बुलाने आया था और हम ऐसा मान बैठते हैं! तब समझ में आता है कि अपना माना हुआ गलत है! आपको क्या लगता है? ऐसी भूल होती है क्या?

**प्रश्नकर्ता :** हाँ, होती है न! ऐसा होता है।

**दादाश्री :** हम ऐसा ही मानते हैं कि वह 'लेने आया' है जबकि वह क्या कहता है? 'चलो, मेरे चाचा खाने पर बुला रहे हैं।' बोलो, अब उस समय आपको इस गुनाह का दंड कौन देगा? वह गुनाह बाकी रहा। यदि तुरंत ही उसका दंड मिल जाए तो वह बाकी नहीं रहेगा। इस प्रकार से निरे गुनाह ही भरे हैं। अभिप्राय अर्थात् प्रेजुडिस।

## प्रेजुडिस रखने से, मन होता है कड़वा

**प्रश्नकर्ता :** गुनाह अर्थात् इसके लिए जो अभिप्राय दिया, वह। अब एक तरफ आप कहते हैं कि अभिप्राय से मन बनता है। तो यह जो अभिप्राय दिया कि यह व्यक्ति फिर से पैसा माँगेगा तो क्या उससे वापस (नया) मन बन रहा है? इस तरह से ऐसे गुनाह हुए, ऐसा कहा जाएगा?

**दादाश्री :** जो मन बन गया उस गुनाह का फल तो अगले जन्म में मिलता है लेकिन अभी आपने जो अभिप्राय बनाया, उसका फल तो तुरंत मिल जाता है। प्रेजुडिस रखना ही नहीं है।

**प्रश्नकर्ता :** तुरंत फल कैसे मिलता है?

**दादाश्री :** अंदर अपना मन कड़वा हो जाता है। वह अशाता वेदनीय है। प्रेजुडिस रखा उस वजह से।

## अभिप्राय के अनुसार न भी हो

अब, वह व्यक्ति अपने पास पाँच बार माँगने आया तो ऐसा कैसे मान सकते हैं छठवीं बार भी वह माँगने ही आएगा?

**प्रश्नकर्ता :** पहले जब पाँच बार माँगने आया था उस समय भी इसके मन में अभिप्राय तो बन ही चुके होंगे। कुछ तो हुआ ही होगा। इसका मतलब उस समय उसने वह साफ (शुद्ध) नहीं किया था और छठवीं बार मोहर लगा दी तो उससे अभिप्राय बैठ गया?

**दादाश्री :** नहीं! पाँचों बार इसके मन में अभिप्राय बैठ ही चुका था, 'हर बार लेने आता है तो यह फिर से लेने आ गया,' ऐसा कहकर फिर से अभिप्राय दे देता था। फिर वापस छठवीं बार, जब लेने आया तब 'देखो वह वापस आ

गया' ऐसा कहता है जबकि उस दिन शायद वह पैसे लेने न भी आया हो, अपने घर खाने पर बुलाने आया हो। भगवान ने क्या कहा है कि तू जैसा अभिप्राय बाँधता है, वैसा नहीं है। वह कर्म के उदय के अधीन है। अर्थात् आज शायद ऐसा नहीं भी हो।

## अभिप्राय ही बंधन

**प्रश्नकर्ता :** बहुत लोग ऐसे होते हैं कि जिनके लिए अभिप्राय रहते हैं कि 'यह व्यक्ति अच्छा है, यह लंपट है, यह लुच्चा है, अरे यह तो लूटने ही आया है।'

**दादाश्री :** अभिप्राय बंधते हैं, वही बंधन है। अगर हमारी जेब में से कल कोई रुपए निकाल ले गया हो और आज वह वापस यहाँ पर आए तो हमें शंका नहीं रहती कि वह चोर है क्योंकि कल उसके कर्म का उदय वैसा था, आज उसका उदय कैसा होगा, वह कैसे कह सकते हैं?

किसी के लिए अभिप्राय रखना, वही अपना बंधन है और किसी के लिए अभिप्राय नहीं रहे तो वही अपना मोक्ष है। किसी से हमारा क्या लेना-देना? वह अपने कर्म भुगत रहा है, हम अपने कर्म भुगत रहे हैं। सब अपने-अपने कर्म भुगत रहे हैं। उसमें किसी का लेना-देना ही नहीं है, किसी के लिए अभिप्राय बनाने की ज़रूरत ही नहीं है।

## अपनी ही भूल का परिणाम

कोई तीनपत्ती वाला (ताश खेलने वाला) यहाँ पर आया हो और आपका उस पर अभिप्राय बैठ गया हो कि 'यह तीनपत्ती वाला है' तो वह यहाँ पर बैठा हो, उतनी देर आपको अंदर खटकता रहेगा। दूसरे किसी को नहीं खटकेगा, उसका कारण क्या है?

**प्रश्नकर्ता :** दूसरे जानते नहीं है कि 'यह तीनपत्ती वाला है', इसलिए।

**दादाश्री :** दूसरे जानते हैं पर अभिप्राय नहीं बैठाते और आपको अभिप्राय बैठ गया है इसलिए खटकता है। ये अभिप्राय आपको छोड़ देने चाहिए। ये अभिप्राय हमने ही बाँधे हैं, यानी यह हमारी ही भूल है इसलिए खटकता है। सामने वाला ऐसा नहीं कहता कि मेरे लिए अभिप्राय बाँधों। हमें खटके, वह तो हमारी ही भूल का परिणाम है।

## पिछले अभिप्राय परिणमित होते हैं पूर्वाग्रह में

यदि अभिप्राय बंद हो जाएँगे तो (नया) मन बनना बंद हो जाएगा। ओपिनियन इज़ द फादर ऑफ माइन्ड (अभिप्राय वह मन का पिता है)। यह तो सिर्फ ओपिनियन ही नहीं प्रेजुडिस वाले भी हैं। कैसे?

**प्रश्नकर्ता :** हाँ! प्रेजुडिस वाले। पूर्वाग्रह।

**दादाश्री :** अगर सिर्फ ओपिनियन ही होता तब तो ठीक था लेकिन प्रेजुडिस भी है। उस व्यक्ति ने परसों चोरी की हो तो उसके आने से पहले ही हम ऐसा कह देते हैं कि यह चोर फिर से आ गया। ऐसा हमें नहीं बोलना चाहिए। आप ऐसा कैसे कह सकते हो कि आज भी वह चोरी करेगा? आपको कोई भविष्यवाणी हुई है? भविष्य का ज्ञान हुआ है? इसे प्रेजुडिस कहा है। अब उस दिन वह बेचारा बैठकर वापस चला जाता है अगर हम बाहर या अंदर गए हों तो भी वह कुछ नहीं लेता।

**प्रश्नकर्ता :** किसी चीज़ को जाने बिना उसके बारे में राय बना लेना प्रेजुडिस है?

**दादाश्री :** नहीं, ऐसा नहीं है। ये भाई, हमेशा दान देते हैं और आज भी वे दान देंगे,

वैसा मान लेना, वह 'प्रेजुडिस' है। कोई व्यक्ति रोज़ आप पर कटाक्ष कर जाता हो और आज भोजन के लिए बुलाने आया हो तो उसे देखते ही विचार आता है कि यह कटाक्ष करेगा, वह प्रेजुडिस।

## ओपिनियन का इक्का, वही प्रेजुडिस है

सारा संसार प्रेजुडिस में ही है। ऐसा होश ही नहीं है न कि मैं किसमें हूँ! पल भर लिए भी होश नहीं है। अच्छे-अच्छे बुद्धिशालियों को भी होश नहीं है।

अब कोर्ट में उन लोगों को भी प्रेजुडिस रखने का अधिकार नहीं है, गुनाहगार हो या न भी हो फिर भी मनुष्य का स्वभाव है, वह प्रेजुडिस से बाहर नहीं निकल सकता। सभी जजों को तो प्रेजुडिस नहीं होता न? कल वह भले ही ले गया हो लेकिन अगले दिन जब आता है तो जज को प्रेजुडिस तो होगा ही नहीं न?

**प्रश्नकर्ता :** नहीं होना चाहिए, दादा।

**दादाश्री :** क्योंकि जज हमेशा प्रेजुडिस के विरोधी होते हैं। बल्कि उन्हें जब ऐसा लगता है तब वे वकीलों से ऐसा कहते हैं कि 'आपको प्रेजुडिस है।' इस तरह वे (प्रेजुडिस के) विरोधी होते हैं, लेकिन जब (वही आरोपी) उनके वहाँ आए तब वापस प्रेजुडिस हो जाता है।

**प्रश्नकर्ता :** दादा, इसलिए व्यवहार में एक चीज़ ऐसी रखी है कि जब एक-दूसरे के साथ निगोसिएशन चलता है तब उसके ऊपर ऐसा लिखा जाता है कि 'विदाउट प्रेजुडिस'(पूर्वाग्रह के बगैर

**दादाश्री :** विदाउट प्रेजुडिस। यह जो कोर्ट में प्रेजुडिस कहा जाता है, वह स्थूल प्रेजुडिस है। सूक्ष्म को तो वे जज भी नहीं समझते न? वह तो स्थूल की बात हुई ये वकील से कहते हैं कि आप हमेशा के लिए ऐसा क्यों मान लेते हो? प्रेजुडिस क्यों रखते हो? कल सुबह उसमें बदलाव भी हो सकता है लेकिन वह तो स्थूल बात है।

अभिप्राय एक प्रकार का पूर्वाग्रह कहलाता है। जजों को भी पता नहीं कि अभिप्राय प्रेजुडिस है। आज अगर हाईकोर्ट के सभी जजों का देखें तो उन्हें बताने पर समझ में आएगा! अगर हम पूछें कि प्रेजुडिस कितने प्रकार के होते हैं? तो ऐसा कहता है कि उसमें अभिप्राय नहीं आता। जज उसे क्या कहता है, 'देट इज़ माइ ओपिनियन' (वह मेरा अभिप्राय है) ओहोहो! बड़ा आया ओपिनियन वाला! वही प्रेजुडिस है।

अभिप्राय देना प्रेजुडिस ही है। संसार गहराई में नहीं जाता इसलिए अभिप्राय को ओपिनियन कहता है इस तरह से गाड़ी चलती ही रहती है।

**प्रश्नकर्ता :** लेकिन वास्तव में वह प्रेजुडिस है।

**दादाश्री :** वास्तव में वह प्रेजुडिस है!

## शंका सहित 'अभिप्राय' ही 'प्रेजुडिस' है

ये सभी जज अभिप्राय देते हैं या नहीं। तब क्या जज प्रेजुडिस में नहीं हैं? अभिप्राय देना, वही प्रेजुडिस है। एक जज को बताया तो वे घबरा गए, मैंने कहा, 'आप प्रेजुडिस से भरे हो। क्या देखकर कह रहे हो कि हम में प्रेजुडिस नहीं है?' अभिप्राय ही प्रेजुडिस है। जजमेन्ट पहले हो चुका था और आज आप अभिप्राय दे रहे हो। जजमेन्ट कल हुआ था, हेतु कल का था जबकि आज तो शायद वह इंसान बदल भी गया हो।

आपको समझ में आया न कि अभिप्राय प्रेजुडिस है? समझ में आया आपको?

**प्रश्नकर्ता :** ऐसा कैसे हो सकता है कि अभिप्राय ही प्रेजुडिस है?

**दादाश्री :** अभिप्राय ही प्रेजुडिस है। यही चोर है या नहीं, यह जाने बगैर आप अभिप्राय दे देते हैं कि इसने कल चोरी की थी।

**प्रश्नकर्ता :** जाने बगैर कैसे? सभी एविडेन्स मिलने पर देते हैं न?

**दादाश्री :** नहीं, ऐसा नहीं है। कल चोरी की थी और आज यदि आप शंका करते हो तो वह प्रेजुडिस कहलाएगा। शंका की वजह से अभिप्राय देते हो उसे प्रेजुडिस कहेंगे।

एविडेन्स को देखेंगे तो वह शंका ही कहा जाएगा क्योंकि किताब वैसा कह सकती है, इंसान नहीं कह सकता। किताब जजमेन्ट दे सकती है। व्यक्ति ऐसा नहीं कह सकता। यदि इंसान ऐसा कहे तो उसे प्रेजुडिस कहा जाएगा। एक मिनट के बाद भी उसे प्रेजुडिस कहा जाएगा।

## जब से शंका तभी से प्रेजुडिस

**प्रश्नकर्ता :** प्रेजुडिस अर्थात् किसी को शुरू से ही शंका की दृष्टि से देखना। वहम की दृष्टि से देखना, वह प्रेजुडिस है?

**दादाश्री :** हाँ, वह प्रेजुडिस कहलाएगा। शंका हो गई, उसी को प्रेजुडिस कहा जाएगा। कल यह ले गया था और आज आया तो उस पर शंका हो गई, तभी से वह प्रेजुडिस कहलाता है।

यह तो देखने पर प्रेजुडिस हुआ लेकिन यदि न देखा हो, तब भी प्रेजुडिस होता है। यदि किसी ने कहा हो न, तब भी प्रेजुडिस हो जाता है। किसी ने ऐसा कहा हो कि 'वह व्यक्ति ही ले गया होगा।' 'होगा' ऐसा बोला, तब भी वह प्रेजुडिस है। जोखमी न्याय को ऐसे कैसे तौल सकते हैं? कितना बड़ा जोखिम है! उसे चोर ठहराना।

## शंका करना गुनाह है

**प्रश्नकर्ता :** अब हमारे अभिप्राय कहाँ पड़ जाते हैं, व्यवहार में पड़ते हैं। यह तो ऐसा होता है कि मुझे पता भी नहीं होता और कहेंगे, 'इन चंदूभाई से कहा है, आपको पाँच हज़ार रुपए दे गए न?' तो मुझे पता भी नहीं चलता कि यह मेरे नाम से झूठ बोलकर आया है इसलिए फिर अभिप्राय पड़ जाता है कि यह झूठा है, गलत है।

**दादाश्री :** भगवान ने तो यहाँ तक कहा है कि कल एक व्यक्ति आपकी जेब में से सौ रुपए ले गया और आपको भनक लगने से या आसपास के वातावरण से पता चल गया। फिर दूसरे दिन जब वह आए तब देखते ही उस पर शंका करो तो वह गुनाह है।

**प्रश्नकर्ता :** और यदि ऐसा अभिप्राय रहे कि यह झूठा है तो वह गुनाह है?

**दादाश्री :** शंका करे वहीं से गुनाह उत्पन्न होता है। भगवान ने क्या कहा है कि 'कल उसके कर्म के उदय से वह चोर था और आज शायद नहीं भी हो।' यह तो सब उदय के अनुसार है।

**प्रश्नकर्ता :** ऐसा नहीं, यह तो एक व्यक्ति जिसका खुद का कोई दूसरा लेनदार हो, उसे ऐसा कहेगा, 'मैंने चंदूभाई से कहा है, उन्होंने आपको पैसे भेज दिए हैं।' तब होता है कि मैं तुझे मिला नहीं, तू मुझे मिला नहीं और इतना झूठ बोल रहा

है? मेरे साथ ऐसा हो, वहाँ पर अब किस तरह से व्यवहार करना चाहिए?

**दादाश्री :** हाँ, ऐसा सब झूठ भी बोलता है, परंतु वह बोला किसलिए? क्यों दूसरे का नाम नहीं दिया और चंदूभाई का ही देता है? इसलिए कहीं न कहीं आप गुनहगार हो। आपके कर्म का उदय ही आपका गुनाह है।

## व्यवहार में सावधान रहो लेकिन नो प्रेजुडिस

**प्रश्नकर्ता :** यह तो बहुत कठिन चीज़ है। व्यवहार में तो प्रेजुडिस रखना ही पड़ता है न?

**दादाश्री :** हम नहीं रखते।

**प्रश्नकर्ता :** ओपिनियन तो रखना ही पड़ता है न? यदि कोई हमारे दस हज़ार रुपए ले जाए और फिर वापस नहीं दे रहा हो तो फिर जब वह दोबारा लेने आए तो क्या वापस उसे चाहिए?

**दादाश्री :** आपको ओपिनियन नहीं रखना है। सावधान रहना है! आपको सावधान रहने का अधिकार है लेकिन प्रेजुडिस रखने का अधिकार नहीं है।

**प्रश्नकर्ता :** मान लीजिए कोई व्यक्ति हमसे दस हज़ार रुपए ले गया और हमें वापस नहीं किए, दगा दे दिया अगर वह दोबारा हमसे दस हज़ार लेने आए तो क्या उसे देने चाहिए?

**दादाश्री :** नहीं! नहीं देना है।

**प्रश्नकर्ता :** क्यों नहीं देना है? हमें तो प्रेजुडिस है ही नहीं तो फिर उसे क्यों नहीं देना है।

**दादाश्री :** उसे प्रेजुडिस नहीं कहेंगे। उसे नहीं देना है, वह तो अपनी मरज़ी की बात है। प्रेजुडिस नहीं रखना है।

## सावधानी से रहने का तरीका सिखाते हैं दादा

कोई हमे दग़ा दे जाए तो हमें वह याद नहीं रखना है। अभी वर्तमान में वह क्या कर रहा है, वह देख लेना चाहिए, नहीं तो प्रेजुडिस कहलाएगा। पिछला याद करने से बहुत नुकसान होता है।

**प्रश्नकर्ता :** पर ध्यान में तो रखना चाहिए न वह?

**दादाश्री :** वह तो अपने आप हो ही जाता है। ध्यान में रखें तो प्रेजुडिस होता है। प्रेजुडिस से तो फिर संसार बिगड़ता है। हमें वीतराग भाव से रहना है। पिछला लक्ष (जागृति) में रहेगा ही, पर वह कुछ हेल्पिंग चीज़ नहीं है। अपने कर्म के उदय वैसे थे इसलिए उसने हमारे साथ वैसा व्यवहार किया था। उदय अच्छे हैं तो अच्छा व्यवहार करेगा। इसलिए प्रेजुडिस रखना मत। आपको क्या पता चले कि जो पहले ठगकर गया, वह आज नफा देने आया है या नहीं? और आपको उसके साथ व्यवहार करना हो तो करो और नहीं करना हो तो मत करना। परंतु प्रेजुडिस मत रखना। और शायद कभी व्यवहार करने का समय आए तब तो बिल्कुल प्रेजुडिस मत रखना।

## संयोगवश हो जाए तो उसमें किसकी गलती?

**प्रश्नकर्ता :** प्रेजुडिस नहीं रखने का मतलब क्या है? ज़रा उदाहरण देकर समझाइए न, दादा।

**दादाश्री :** कोई व्यक्ति कल जेब में से सवा सौ रुपए ले गया। घर के सभी लोगों ने उसे देखा हो और जब वह दूसरे दिन आए तो घर के लोग ऐसा ही कहते हैं कि 'यह चोर है।' उसे चोर कैसे कह सकते हैं?

**प्रश्नकर्ता :** चोरी की इसलिए....

**दादाश्री :** ऐसी चोरी करने वाले को चोर नहीं कहते। ऐसा तो मूर्ख लोग, फूलिश लोग ऐसा कहते हैं। उसे चोर कह ही नहीं सकते। अत: प्रेजुडिस नहीं रखना है। यदि वह दूसरे दिन आए तो चोरी करेगा ही ऐसा हम कैसे कह सकते हैं। आप किस आधार पर समझ गए कि वह चोरी करेगा ही। आपको सावधान रहना चाहिए। यदि आप कोट वगैरह बाहर रखते हो तो उस समय बाहर मत रखना, अंदर रख देना लेकिन प्रेजुडिस मत रखना क्योंकि इस दुनिया में जितने भी चोर पकड़े जाते हैं, वे सभी संयोगवश चोर बनते हैं। संयोगवश का मतलब समझे आप?

**प्रश्नकर्ता :** अर्थात् सरकमस्टेन्सिस (संयोगों) की वजह से चोरी करते हैं?

**दादाश्री :** हाँ, उसी की वजह से चोरी करते हैं। वास्तव में वह व्यक्ति चोर नहीं है। उसे ऐसे संयोग आ गए कि चोरी करनी पड़ी। अगले दिन चोरी नहीं करेगा वह व्यक्ति।

**प्रश्नकर्ता :** संयोग मिले तब भी? चान्स (मौका) मिले तब भी?

**दादाश्री :** तब भी नहीं करेगा। जब तक उसे ज़रूरत है, तब तक दो-तीन दिनों तक करेगा। लेकिन वह हमेशा के लिए चोर नहीं है। उसे हम चोर नहीं कह सकते। उसके लिए प्रेजुडिस नहीं रख सकते। पक्का चोर तो पकड़ा ही नहीं जाएगा।

**प्रश्नकर्ता :** वास्तव में चोर कौन होता है? किसे कहते हैं?

**दादाश्री :** जो पकड़ा न जाए, वह।

**प्रश्नकर्ता :** हम तो जो पकड़ा जाए उसी को चोर कहते हैं।

**दादाश्री :** हिन्दुस्तान के लोग तो जो पकड़ा जाए उसे, जो ज़िंदगी में सिर्फ एक ही बार चोरी करने गया और पकड़ा गया लोग उसी को चोर कहते हैं, हमेशा के लिए। कितना गुनाह है! उसे चोर नहीं कह सकते। हम तो उसे चोर भी नहीं मानते क्योंकि वह तो उस पर आरोप लगाना कहा जाएगा। सती स्त्री पर वैश्या होने का आरोप लगाना कहा जाएगा। संयोगवश कौन चोरी नहीं करता? आपको क्या लगता है?

यदि कोई राजा जंगल में जाए और भटक जाए, खाने-पीने का कुछ भी नहीं हो तो वह संयोगवश चोरी करेगा या नहीं? संयोगवश बने चोर को चोर नहीं कहेंगे, संयोगवश तो राजा भी चोरी कर सकता है। पूर्ण रूप से पक्का किए बगैर अभिप्राय नहीं दे सकते। पूर्ण रूप से पक्का करने की शक्ति किसमें है?

इसमें कोई दोषित नहीं है। यह काल ही ऐसा है। सब संयोगवश होता है। उसमें उसका भी क्या कसूर?

## जगत् के जीव हैं कर्माधीन

कोई कहे, 'यदि मैंने खुद देखा हो कि कल यह व्यक्ति जेब में से रुपए ले गया था और आज वापस आया है।' तब भी उस पर शंका नहीं करनी चाहिए। उस पर शंका करने के बजाय हमें अपनी 'सेफ साइड' कर लेनी चाहिए क्योंकि शंका 'प्रेजुडिस' कहलाता है। आज वह शायद ऐसा न भी हो क्योंकि कितने ही लोग हमेशा के लिए चोर नहीं होते हैं संयोगवश चोर बन जाते हैं। बहुत ही तकलीफ आए तो चोरी कर लेते हैं

लेकिन वापस छः सालों तक दिखाई नहीं देते। जेब में रखे रह जाएँ तब भी नहीं छूते। ऐसे संयोगवश चोर!

**प्रश्नकर्ता :** कई लोग शातिर होते हैं, वे चोरी करने का व्यापार ही लेकर बैठे होते हैं।

**दादाश्री :** वे चोर, वह अलग चीज़ है। यदि ऐसे चोर हों न, वहाँ तो हमें कोट दूर रख देना चाहिए। इसके बावजूद भी उसे चोर नहीं कहना चाहिए क्योंकि हम थोड़े ही उसे मुँह पर चोर कहते हैं! मन में ही कहते हैं न? मुँह पर कहेंगे तो पता चल जाएगा न! मन में कहने पर अपना जोखिम रहता है, मुँह पर कह दें तो हमें उसका जोखिम नहीं रहता। मुँह पर कह देंगे तो मार खाने का जोखिम है और मन में कहेंगे तो अपना जोखिम है। तब फिर क्या करना चाहिए हमें?

**प्रश्नकर्ता :** मन में भी नहीं रखना चाहिए और मार भी नहीं खानी चाहिए।

**दादाश्री :** हाँ, वर्ना मुँह पर कह देना अच्छा, सामने वाला दो गालियाँ देकर चला जाएगा लेकिन यह जो मन में रहा, उसकी जोखिमदारी आती है तो फिर उत्तम कौन सा? मन में भी नहीं रखना है और मुँह पर भी नहीं कहना, वही उत्तम। मन में रखना, उसे भगवान ने 'प्रेजुडिस' कहा है। कल कर्म का उदय था और उसने लिया, और आज शायद कर्म का उदय नहीं भी हो क्योंकि, 'जगत् जीव हैं कर्माधीन!' ऐसा होता है या नहीं होता?

**प्रश्नकर्ता :** होता है।

**दादाश्री :** फिर भी लोग शंका रखने में बहुत पक्के हैं। नहीं क्या? हम तो शंका रखते ही नहीं हैं। शंका बंद ही कर दी, ताला ही लगा चुके हैं न! जो शंका निकाल देते हैं, वे 'ज्ञानी' कहलाते हैं। इस शंका के भूत से तो पूरा जगत् मर रहा है। कहेगा, 'यहाँ से होकर ऐसे गया था, कल यही अंदर आया था और ले गया था। वही अब इधर से गया वापस।' यों अंदर शंका उत्पन्न हुई।

## संभलकर चलना लेकिन आरोप मत लगाना

प्रेजुडिस नहीं रखना चाहिए। हम प्रेजुडिस नहीं रखते। कोट को कहीं और रख देते हैं। आपको सावधान रहना चाहिए लेकिन प्रेजुडिस नहीं रखना चाहिए।

**प्रश्नकर्ता :** पहले दिन यह अनुभव हो गया कि उसने पैसे चोरी किए, उसके बाद दूसरे दिन आए, तब कोट ज़रा दूर रख दिया तो वह प्रेजुडिस ही हुआ न?

**दादाश्री :** नहीं, वह प्रेजुडिस नहीं है। वह तो हमारी सावधानी के लिए है। हम उसे प्रेजुडिस मानते ही नहीं न! वह चोरी करेगा ऐसा हम मानते ही नहीं है न। वह तो उसके कर्म के उदय और मेरे कर्म के उदय की वजह से चोरी हो गई।

**प्रश्नकर्ता :** तो फिर आपने कोट दूर क्यों रख दिया?

**दादाश्री :** यदि हमें ऐसा लगे कि भाई, यहाँ पर तो ऐसा है तो संभालकर रख देना चाहिए लेकिन इस वजह से उस व्यक्ति पर आरोप नहीं लगाते। यदि वह अच्छा व्यक्ति हो तब भी कोट को तो अलग ही रखना चाहिए क्योंकि अंत में उसके मन में भाव तो बिगड़ेंगे ही। सभी ऐसे नहीं होते। कभी कोई व्यक्ति ऐसा होगा तो उसका भाव बिगड़ेगा ही सोचेगा कि 'यह लेने लायक है।'

फिर भले ही वह चोरी का कार्य भी करे। कार्य तो यदि पिछले जन्म में कारण डाले होंगे तभी हो सकेगा वर्ना नहीं होगा। अभी भाव बिगाड़ने से वह वापस अगले जन्म का कर्म बाँधेगा।

आप पैसे जेब में रखते हैं और आपको पता चले कि यह व्यक्ति जेब में से निकालकर ले गया था तो किसी के प्रति अभिप्राय न बने इसलिए आपको पैसे दूसरी जगह पर रख देने चाहिए। हमें तो उसके लिए अभिप्राय दिए बगैर सावधानीपूर्वक चलना है।

हमें मन में उसके लिए शंका नहीं रखनी है। हमें सतर्क रहकर... किसी भी चीज़ को लापरवाही से नहीं रखना है। अर्थात् उससे सतर्क रहो ऐसा नहीं लेकिन व्यवहार में व्यक्ति को सतर्क रहना ही चाहिए। उसके बाद किसी पर पूर्वाग्रह नहीं रखना पड़ेगा। किसी पर ब्लेम (दोषारोपण) नहीं लगाना पड़ेगा।

## अभिप्राय छूटते ही शंका चली जाती है

किसी पर शंका नहीं होनी चाहिए। शंका होना, अर्थात् जो सब अभिप्राय पड़े हुए हैं, वह उसका परिणाम है। उसके लिए अभिप्राय नहीं रखना चाहिए। अगर आपको ऐसा लगे कि यदि इस जगह पर कोट रखने से कुछ नुकसान हो सकता है तो दूसरी जगह पर रख दो। आपको किसी के लिए अभिप्राय देने की ज़रूरत नहीं है। ये सब तो भगवान हैं।

**प्रश्नकर्ता :** लेकिन इसके बावजूद शंका कैसे मिटेगी?

**दादाश्री :** वह शंका न रहे उसी के लिए कहते हैं कि आप अभिप्राय छोड़ दो न। अभिप्राय की वजह से शंका होती है।

## दादा को सौंपकर, बैठो आराम से

जो पूरी रात काटती रहे उसे कहते हैं शंका। इसके जैसा और कोई भी कीड़ा इस दुनिया में नहीं जन्मा है। इस कीड़े ने लोगों को मार डाला है। हम इसके विरोधी हैं। जैसे ही शंका होने लगे वैसे ही दादा का नाम लेकर कह देना कि 'दादा, मुझे तो शंका हो रही है।' फिर जो भी केस हो उसे दादा को सौंप देना उसके बाद आराम से बैठो।

इंसान को शंका तो कभी भी नहीं करनी चाहिए। आँखों से देखा हो फिर भी शंका नहीं करनी चाहिए। शंका जैसा एक भी भूत नहीं है। शंका उत्पन्न होते ही उसे जड़ से निकाल देना चाहिए कि, ''दादा' ने मना किया है।''

'ज्ञानी' के 'ज्ञान' से शंका जाएगी! किसी से भी, साँप से भी छुआ नहीं जा सके, ऐसा यह जगत् है। 'हम' ज्ञान में देखकर कहते हैं कि यह जगत् एक क्षण के लिए भी अन्यायी नहीं हुआ है। जगत् की कोर्ट, न्यायाधीश, मध्यस्थ, सभी अन्याय वाले हो सकते हैं, परंतु जगत् अन्यायी नहीं हुआ है इसलिए शंका मत करना।

## 'व्यवस्थित' कहते ही समाधान

**प्रश्नकर्ता :** तो क्या ऐसा समझना है कि उसका था इसलिए वह ले गया?

**दादाश्री :** बस! यह एक ही बात है कि आपकी चीज़ कोई नहीं ले सकता और अगर ले गया तो वह चीज़ आपकी थी ही नहीं। अभी भी जितना उसका है उतना ही ले जाएगा इसलिए धीरज रखो लेकिन उसे चोर मत कहो, वह चोर नहीं है। आप उसका माल दबाकर ले आए हो, अथवा तो किसी का गलत माल ले आए हो इसीलिए ऐसा न्याय होता है।

**प्रश्नकर्ता :** जितना उसका है उतना ही वह ले जाता है।

**दादाश्री :** सही समझे आप। हम उसे 'व्यवस्थित' कहते हैं न! यदि जेब काट ले तो व्यवस्थित। काटने वाले को बुरा नहीं कहना है और वापस मन भी नहीं बिगाड़ना है। व्यवस्थित है।

व्यवस्थित ने व्यवस्थित ही किया है। पहले से ही ज्ञानियों ने सिखाया हैं कि तेरा कोई नहीं ले जा सकता। देखो यह वाक्य काम में आता है न? यों इसका सहारा लेने से नींद आएगी या नहीं? फिर अंत में मन में ऐसा भी लगता है कि 'भाई, उसका रहा होगा तो वह ले गया', तुरंत वापस सो जाता है। वर्ना, पूरी रात नींद न आए। कुछ समाधान तो चाहिए या नहीं?

## 'जो भी हो वह ठीक है' ऐसा रखना है

प्रकृति से ही यदि वह चोर हो, आप दस साल से उसे चोरी करते हुए देख रहे हों और वह आकर आपके पैर छू जाए तो आपको क्या उस पर विश्वास रखना चाहिए? विश्वास नहीं रख सकते। चोरी करे, उसे हम माफ कर दें कि 'तू जा, अब तू छूट गया, तेरे लिए मेरे मन में कुछ नहीं रहेगा।' परंतु उस पर विश्वास नहीं रखना चाहिए और उसका फिर संग भी नहीं रखना चाहिए। फिर भी यदि संग रखा और फिर विश्वास नहीं रखो तो वह भी गुनाह है। वास्तव में संग रखना ही मत और रखो तो उसके लिए पूर्वाग्रह रहना ही नहीं चाहिए। 'जो भी हो, वह ठीक है' ऐसा रखना।

## ठीक नहीं लगे तो उपेक्षा करना, द्वेष नहीं

यदि आप उसे चोर मानोगे तो आपको राग-द्वेष हो जाएगा। क्योंकि 'यह चोर है' ऐसा आप मानते हो और वह तो लौकिक ज्ञान है जबकि अलौकिक ज्ञान वैसा नहीं है। अलौकिक में तो एक ही शब्द कहते हैं कि 'वह तेरे ही कर्म का उदय है। उसके कर्म का उदय और तेरे कर्म का उदय, वे दोनों एक हुए इसलिए वह ले गया। उसमें तू वापस किसलिए अभिप्राय बनाता है कि यह चोर है?'

जेब काट ली, उस पर द्वेष नहीं। क्रिया पर द्वेष नहीं करना है। उस पर करूणा रखनी है। भगवान ने क्या कहा कि द्वेष मत करना। ठीक नहीं लगे तो उपेक्षा करना।

## पूर्वाग्रह का असर होता है आमने-सामने

**प्रश्नकर्ता :** यह जो स्ट्रोंग ओपिनियन है, वही पूर्वाग्रह कहलाता है?

**दादाश्री :** पूर्वाग्रह अर्थात् उसे चोर मानते हैं और चोर कहते हैं और मन में भी वैसा ही सोचते हैं, उसे पूर्वाग्रह कहते हैं। उसका असर हम पर भी होता है और सामने वाले पर भी होता है।

**प्रश्नकर्ता :** उसे भी होता है?

**दादाश्री :** हाँ, आपने ऐसा सोचा इसलिए।

**प्रश्नकर्ता :** हमारे सोचने से उस पर असर होता है?

**दादाश्री :** अर्थात् यह सोचा हुआ बंधनकारक है। वह मन को बाँधता है।

उस पर इस पूर्वाग्रह का असर होता है। किसी भी पूर्वाग्रह का असर हुए बगैर नहीं रहता इसलिए किसी के लिए पूर्वाग्रह नहीं रखना चाहिए। पूर्वाग्रह तो नहीं लेकिन उसके बारे में हमें बुरा भी नहीं सोचना चाहिए। यदि हमें उसके लिए

बुरा विचार आएँ न, तो भी हमें उसमें एडजस्ट (एकाकार) नहीं होना है।

## सारी परवशता अभिप्रायों की वजह से

यदि आप किसी व्यक्ति के लिए बुरा अभिप्राय रखते हो न, तो उस व्यक्ति को देखते ही आपका मन बिगड़ जाता है। बिगड़ता है या नहीं? क्यों? क्योंकि आपका अभिप्राय प्रेजुडिस हो चुका है।

एक बच्चे के लिए बुरा अभिप्राय हो गया। एक दिन बुरा अभिप्राय हुआ, दूसरे दिन हुआ, उसके बाद 'तू बहुत बुरा है, तू बहुत बुरा है, तू बहुत बुरा है।' अरे भाई! क्या हर बार बुरा ही है? क्या हमेशा के लिए, सभी केस में वह गुनाहगार है? अरे! आप किस प्रकार के न्यायाधीश बन बैठे, बाप बन गए इसलिए? लेकिन उसका यह अभिप्राय बनने से वह खुद ही परवश हो गया। फिर उसे ऐसा ही प्रेजुडिस हो जाता है कि 'यह बच्चा ऐसा ही है, बच्चा ऐसा ही है'। वह हर बार ऐसा नहीं होता लेकिन वह पहले वाला प्रेजुडिस आगे से आगे काम करता रहता है।

## प्रेम से होता है बदलाव, प्रेजुडिस से नहीं

**प्रश्नकर्ता :** लेकिन कितनी ही बार बच्चों को बियोन्ड रिपेयर (सुधार न सके वैसे) होने के बादे छोड़ देना पड़ता है।

**दादाश्री :** नहीं, इस तरह से छोड़ नहीं देना है।

**प्रश्नकर्ता :** अब, वह दोबारा नहीं आएगा। कल ही कहा।

**दादाश्री :** नहीं, वह फिर आपकी मान्यता है, वह आपका व्यू पोईन्ट है। हमारे व्यू पोइन्ट से तो चाहे कितना भी बियोन्ड लिमिट (हद से बाहर) हो जाए न, तब भी अंदर परिवर्तन हो जाता है। उसमें जो आत्मा है, वह मनुष्य है और उसने खानदानी घर में जन्म लिया है इसलिए वह सुधर सकता है।

आपके मन में जितनी भी बिलीफें बैठ गई हैं न, वे सभी एकांतिक बिलीफें हैं। एकांतिक अर्थात् आपने जो माना, उसी को करेक्ट (सही) मानते हो, ऐसी बिलीफें बैठ गई हैं जबकि आपके उस करेक्ट को संसार स्वीकार नहीं करेगा न?

**प्रश्नकर्ता :** नहीं! लेकिन मैं ज़बरदस्ती अपने मत को मानने का नहीं कहता।

**दादाश्री :** नहीं, ज़बरदस्ती नहीं मनवाते लेकिन उसके बावजूद भी आपके मत में वह पहले वाला मत है न, उसका सब पर असर होता है।

**प्रश्नकर्ता :** मेरा मत तो अनुभव के आधार पर बन गया है।

**दादाश्री :** वह ठीक है। उस अनुभव के आधार पर है लेकिन दूसरों पर असर होता है न! बच्चों पर असर होता है। बच्चे बुरे हों, तब भी हमें अपने मन में उन्हें अच्छा ही मानना चाहिए। प्रेजुडिस बिल्कुल निकाल देना है। किसी के लिए प्रेजुडिस नहीं रखना है। यदि प्रेजुडिस निकाल देंगे तो बदल जाएगा वर्ना, नहीं बदलेगा। प्रेम से सब बदल जाता है। अघट प्रेम, जिसे परमात्म प्रेम कहा जाता है, उससे सुधारना है। मारपीट से नहीं सुधारना है।

## पूर्वाग्रह के बगैर डाँटा हुआ काम का

यदि पूर्वाग्रह के बगैर कहना आए तो फायदा होगा लेकिन पूर्वाग्रह के बगैर कौन कह सकता है? सिर्फ, ज्ञानीपुरुष। इसलिए संसार में बस यही

करना है; किसी को कुछ भी नहीं कहना है। जो मिले, वह आराम से खा लेना है और सब चलो अपने-अपने काम पर। काम करते रहना है। कहना करना नहीं। तू तो नहीं कहती न, बच्चों और पति से?

**प्रश्नकर्ता :** बहुत कम कर दिया है।

**दादाश्री :** बिल्कुल मत करना। दादा की आज्ञा! डाँटने से तो बच्चे बिगड़ जाते हैं, ऐसे सुधरते नहीं भला! भला किस माँ में बरकत है कि बच्चे को डाँटती रहे? उस मदर (माँ) में बरकत होनी चाहिए न? डाँटा हुआ कब काम का है? जब पूर्वाग्रह न हो, तब डाँटा हुआ काम का है। पूर्वग्रह अर्थात् कल डाँटा था न, वह मन में याद रहता है, 'ऐसा ही है, ऐसा ही है' और फिर वापस डाँटे इसलिए फिर इसमें से ज़हर फैलता है। भगवान ने इसे भयंकर रोग कहा है, मूर्ख बनने की निशानी है। एक अक्षर भी नहीं कहना है।

## अभिप्राय के परिणाम स्वरूप कठोर वाणी

एक बार मन विषैला हो गया फिर उसकी लिंक शुरू हो जाती है। फिर मन में उसके लिए अभिप्राय बन जाता है कि 'यह आदमी ऐसा ही है।' तब आपको मौन रहकर सामने वाले को विश्वास में लेने जैसा है। बोलते रहने से किसी का नहीं सुधरता। सुधरना तो, 'ज्ञानीपुरुष' की वाणी से सुधरता है। बिगड़े हुए को सुधारना वह हमसे हो सकता है, आपको नहीं करना है। आपको हमारी आज्ञा के अनुसार चलना है। वह तो जो सुधरा हुआ हो, वही दूसरों को सुधार सकता है। खुद ही नहीं सुधरे हों तो दूसरों को किस तरह सुधार सकेंगे?

कुछ लोगों की वाणी बहुत बिगड़ी हुई होती है, वह भी अभिप्राय के कारण होता है। अभिप्राय के कारण कठोर वाणी निकलती है, *तंतीली* (तीखी, चुभने वाली) निकलती है! *तंतीली* अर्थात् खुद ऐसा *तंतीला* बोलता है और सामने वाले को भी वैसा करने को उकसाता है!

## इजाज़त लेकर करो बात

**प्रश्नकर्ता :** हमें बोलते समय किस प्रकार की जागृति रखनी चाहिए?

**दादाश्री :** जागृति ऐसी रखनी है कि ये बोल बोलने से किसे-किसे, किस प्रकार से प्रमाण दुभाया जा रहा है। यह देखना है।

**प्रश्नकर्ता :** सामने वाले व्यक्ति से बातचीत करते समय क्या ध्यान रखना चाहिए?

एक तो, यदि 'उनसे' बात करनी हो तो आपको पहले उनके 'शुद्धात्मा' से इजाज़त लेनी पड़ेगी कि 'इन्हें अनुकूल आए ऐसी वाणी बोलने की मुझे परम शक्ति दीजिए।' फिर आपको दादा की इजाज़त लेनी पड़ेगी। इस तरह से इजाज़त लेकर बोलने से वाणी ठीक तरह से निकलेगी।

## समभाव से निकाल करने पर पूर्वाग्रह कम होंगे

**प्रश्नकर्ता :** क्या कई बार ऐसा नहीं होता कि हमें सामने वाले का व्यू पोइन्ट ही गलत दिखाई देता है इसलिए फिर हमारी वाणी भी कर्कश निकलती है?

**दादाश्री :** वैसा दिखाई देता है तभी तो उल्टा होता है न! वे सभी पूर्वग्रह और वही सब बाधक है न! 'बुरा है, बुरा है!' ऐसा पूर्वाग्रह हो चुका है, इसलिए फिर वाणी भी वैसी ही बुरी निकलती है! वे सभी पूर्वाग्रह हैं। पूर्वाग्रह में एकदम से चेन्ज (बदलाव) नहीं करना चाहिए।

पूर्वाग्रह बंद करने के लिए, बोलने से पहले (सहमति) इजाज़त लेकर काम करोगे तो चलेगा और साथ ही इस ज्ञान के बाद जैसे-जैसे 'समभाव से *निकाल* (निपटारा)' करते जाओगे वैसे-वैसे पूर्वाग्रह भी कम होते जाते जाएँगे और उसके बाद जो कुछ भी बोलोगे तो वह पूर्वाग्रह रहित होगा है।

## अभिप्राय बदलते ही हम मुक्त

**प्रश्नकर्ता :** हमें लगे कि इसका भला हो रहा है तो उसे टोकते रहते हैं तो वह ठीक नहीं है न? किसी को उसके भले के लिए डाँटना या टोकना चाहिए या नहीं?

**दादाश्री :** नहीं, वह तो अपने हाथ में नहीं है न! लेकिन वह करने जैसा नहीं है। फिर भी यदि टोक देते हो तो उसे भी देखते रहना है। वह तो यदि हमें नहीं करना हो तो भी हो जाता है। यदि नहीं डाँटना हो फिर भी डाँट देते हैं इसलिए उसे हमें देखते ही रहना कि 'ऐसा नहीं होना चाहिए'। अपने मन में ऐसा अभिप्राय रहना चाहिए कि 'ऐसा नहीं होना चाहिए'। अपना अभिप्राय बदल जाएगा तो हम मुक्त। उसके बाद अपनी ज़िम्मेदारी नहीं रहेगी।

**प्रश्नकर्ता :** अब, किसी से बात हो रही हो और अपनी वाणी बुरी निकल रही हो और उसके बाद हम ऐसा कहें कि 'ऐसी वाणी नहीं होनी चाहिए'। हमें अपनी भूल दिखाई देती है फिर भी वह सुधरती क्यों नहीं?

**दादाश्री :** वह नहीं सुधरेगी। वह तो एक बार टेप हो चुकी है न।

**प्रश्नकर्ता :** सुधारने की सत्ता नहीं है?

**दादाश्री :** कोई सत्ता नहीं है। अपना अभिप्राय ऐसा होना चाहिए कि 'ऐसी वाणी नहीं होनी चाहिए' और कुछ नहीं तो अभी भी एक-दो जन्म बाकी हैं तो आगे के लिए टेप बदल जाएगी। बस इतना ही।

## अभिप्राय कम होते-होते मन साफ हो जाता है

यदि आप किसी व्यक्ति से कहते हो कि 'आप झूठे हो' तो, अब 'झूठे हो' कहते ही भीतर इतना साइन्स काम कर जाता है, उसके इतने पर्याय उत्पन्न हो जाते हैं कि आपको एक-दो घंटे तक तो उस पर प्रेम ही नहीं आता।

आप जैसा मानते हो, जैसा अभिप्राय रखते हो, वास्तव में वह वैसा है नहीं। वे सभी बातें गलत हैं। उसके बाद यदि आपको बात करनी होगी तब भी सामने वाला बात नहीं करेगा। तब तुरंत समझ जाना चाहिए और तुरंत ही उसे मिटा देना चाहिए। अभिप्राय बनने ही नहीं देना है।

यह साइन्टिफिक चीज़ है लेकिन अगर इस तरह से समझ लेंगे तो सारा हल निकल आएगा। अज्ञानियों का भी हल निकल आएगा। यदि अभिप्राय देना कम हो जाए न, तो मन साफ होता जाता है। एकदम से कम नहीं होता लेकिन थोड़ा-थोड़ा कम कर सकते हैं न!

## परिणाम में प्रेजुडिस नहीं चाहिए

**प्रश्नकर्ता :** आपने कहा कि किसी के लिए अभिप्राय नहीं बनाने हैं तो क्या अच्छे अभिप्राय भी नहीं बनाने हैं?

**दादाश्री :** यदि अच्छा अभिप्राय बनाओगे तो वह भी आपको बाँधेगा और बुरा अभिप्राय बनाओगे तो भी आपको बाँधेगा। यदि आपको बंधना नहीं है तो अभिप्राय मत बनाना।

**प्रश्नकर्ता :** लेकिन, क्या ऐसा भी अभिप्राय नहीं बनाना है कि ये ज्ञानी हैं?

**दादाश्री :** वह बना लेना। हमें जिस गाँव जाना है, उस गाँव का बनाना। बेकार ही, जहाँ नहीं जाना है और अगर उसके लिए अभिप्राय को पोषण देंगे तो उसका फल मिलेगा। वहाँ जाकर क्या करना है? अरे वैसे भी, ऐसा कोई भी अभिप्राय नहीं बनाना चाहिए कि जो प्रेजुडिस में परिणामित हो।

## जो अभिप्राय रखता है, वह गुनहगार है

**प्रश्नकर्ता :** अच्छा अभिप्राय भी प्रेजुडिस है और बुरा अभिप्राय भी प्रेजुडिस है। यह ज़रा समझाइए।

**दादाश्री :** प्रेजुडिस अर्थात् क्या कहना चाहते हैं? जो प्रेजुडिस रखता है, वह गुनहगार है। अर्थात् कोई व्यक्ति यदि अभिप्राय रखता है तो वह गुनहगार कहलाता है।

**प्रश्नकर्ता :** हाँ, वह ठीक है लेकिन क्या अच्छा अभिप्राय रखें तो वह भी गुनहगार है?

**दादाश्री :** अच्छा या बुरा, जो अभिप्राय रखता है, वह गुनहगार है। 'यह व्यक्ति दानी है', जब वह आता है तो दानी दिखाई देता है। उसके लिए अभिप्राय बनाना भी गुनाह कहलाएगा।

**प्रश्नकर्ता :** लेकिन क्या उसके दानी होने के बावजूद भी वैसा अभिप्राय बनाना गुनाह है?

**दादाश्री :** आज वह दान दे रहा है और मन में ऐसा सोचे कि 'यह दान देना गलत है। यह शोभा नहीं देता।' इसलिए हम अभिप्राय नहीं दे सकते कि 'यह दानी है' क्योंकि उस टाइम पर उसकी परिणती न जाने क्या हो! उसकी परिणती कर्म के उदय के अधीन रहती है। आज अगर कोई कुछ चोरी करके ले जाए और कल हम उसके लिए कल्पना करें कि वह चोरी करेगा तो वह गुनाह कहलाएगा।

## जैसा देखा वैसा जानो, अभिप्राय नहीं

समझदार व्यक्ति प्रेजुडिस नहीं रखते। पचास हज़ार लोग हों, तब भी हम प्रेजुडिस नहीं रखते।

**प्रश्नकर्ता :** लेकिन अच्छा अभिप्राय हो, वह भी प्रेजुडिस कहलाता है?

**दादाश्री :** 'अच्छा है' ऐसा मुँह पर कहते ज़रूर हैं लेकिन उसमें हमारा अभिप्राय नहीं रहता। अच्छे को 'अच्छा है,' ऐसा जानते हैं लेकिन प्रेजुडिस नहीं, अभिप्राय नहीं। और बुरे को बुरा जानेंगे लेकिन उसका मतलब यह नहीं कि वह आज ऐसा ही है ऐसा हम नहीं मानते। आज कर्म के उदय क्या से क्या हो जाएँ! अरे, बड़े-बड़े ब्रह्मचारी भी अब्रह्मचर्य में रचे-पचे होते हैं और ब्रह्मचारी कहलाते हैं! इसलिए अपना यह विज्ञान ऐसा मानने के लिए मना करता है। वीतराग भी किसी के लिए ऐसा एक अक्षर भी नहीं मानते थे! घर की वाइफ के लिए भी अभिप्राय नहीं देते थे, तब वे कितने समझदार थे!

**प्रश्नकर्ता :** तो अगर पत्नी अच्छी हो फिर भी अभिप्राय नहीं!

**दादाश्री :** अभिप्राय नहीं, नो ओपिनियन। उसका कारण है कि क्या इसके कर्म के उदय हमेशा ऐसे ही आएँगे? नहीं, ऐसा नहीं है। कर्म के उदय बदलते ही रहते हैं। अभिप्राय का अर्थ क्या होता है? कि उसके कर्म हमेशा ही ऐसे रहेंगे।

**प्रश्नकर्ता :** अर्थात् डिसिज़न (निर्णय) नहीं लेना चाहिए।

**दादाश्री :** नहीं। अभिप्राय से ही डिसिज़न लिया न कि चोर को चोर माना और साहूकार को साहूकार ही माना। अब चोर ने तो चोरी कल की थी, तब उसके मन में क्या भाव हुआ कि 'कभी भी चोरी नहीं करनी चाहिए।' ऐसा सोचकर वह आज अपने यहाँ आ जाए और उसके बाद हम उसे चोर ही समझें तो हम कितने गुनहगार बन जाएँगे! संसार के लोग भले ही बन जाएँ लेकिन अक्रम विज्ञान जानने के बाद हमें गुनहगार नहीं बनना चाहिए। वीतराग कितने समझदार थे! घर के लोगों के लिए ज़रा भी अभिप्राय नहीं। हमें भी कभी किसी के लिए अभिप्राय नहीं रहता।

**प्रश्नकर्ता :** यानी कि सिर्फ जानना ही है।

**दादाश्री :** हाँ, जानना है। जैसा देखा वैसा जानना है, उसके लिए अभिप्राय नहीं रखना है, अक्रम विज्ञान के आधार पर।

## नहीं रखो पूर्वाग्रह, बदलते हुए पुद्गल के प्रति

इस 'प्रेजुडिस' के कारण संसार खड़ा रहा है। पहले का 'जजमेन्ट' छोड़ दो। वह तो बदलता ही रहता है। चोर अपने सामने चोरी करे तो भी उस पर पूर्वाग्रह मत रखना, कल शायद वह साहूकार भी बन जाए। हमें एक क्षण के लिए भी पूर्वाग्रह नहीं होता।

ज्ञानी क्या कहते हैं कि किसी भी व्यक्ति के लिए पूर्वाग्रह मत रखना। कल तक जो चोर था, वह आज साहूकार बन सकता है इसलिए हमेशा उसे साहूकार ही मानो और देखो कि क्या होता है। ऐसा कहते हैं कि सावधान रहकर चलो लेकिन पूर्वाग्रह मत रखो। पूर्वाग्रह की वजह से उसने तो खो दिया है लेकिन आप अपना क्यों खो रहे हो? वह तो कल सुबह साहूकार बन जाएगा। आप अपना जजमेन्ट हमेशा वही का वही रखते हो क्या? किसी भी जजमेन्ट से ऐसा नहीं रख सकते क्योंकि *पुद्गल* तो हर क्षण बदलता है।

## दोष देखने से जोखिम

इस पूर्वाग्रह के कारण तो पूरी दुनिया मार खाती है और इसीलिए उसके कारण दोष लगते हैं। इससे तो ये दु:ख हैं न, नहीं तो वर्ल्ड में दु:ख क्यों होते? और भगवान दु:ख देते नहीं, सब आपके ही खड़े किए हुए दु:ख हैं, और वे आपको परेशान करते हैं। उसमें भगवान क्या करें? किसी पर प्रेजुडिस मत रखना। किसी का दोष मत देखना। यह यदि समझ जाओगे तो हल आ जाएगा।

**प्रश्नकर्ता :** यदि दोष नहीं देखेंगे तो दुनिया की दृष्टि में हम एक्सेस फूल (अधिक मूर्ख) नहीं लगेंगे?

**दादाश्री :** तो क्या दोष देखने से सफल होते हैं?

**प्रश्नकर्ता :** तो क्या दोष देखने से नहीं पर डिस्टिंग्शन करना कि यह मनुष्य ऐसा है, यह मनुष्य ऐसा है।

**दादाश्री :** नहीं, उसी से तो जोखिम है न सारा। वह प्रेजुडिस (पूर्वाग्रह) कहलाता है। प्रेजुडिस किसी के प्रति रखना नहीं चाहिए।

## दोषित नहीं, निर्दोष समझो

**प्रश्नकर्ता :** यानी कि हर एक व्यक्ति को निर्दोष जानना है?

**दादाश्री :** नहीं। निर्दोष मानना अर्थात् वह

अभिप्राय हुआ, ओपिनियन हुआ। हमें तो सभी को निर्दोष जानना है।

**प्रश्नकर्ता :** और अगर दोषित हो तो दोषित जानना है?

**दादाश्री :** नहीं, अपने ज्ञान में दोषित नहीं, निर्दोष ही जानना है। दोषित कोई होता ही नहीं है। दोषित भ्राँत दृष्टि से है। भ्राँत दृष्टि दो भाग कर देती है, यह दोषित है और यह निर्दोष है, यह पापी है और यह पुण्यशाली है जबकि इस दृष्टि से एक ही है कि यह निर्दोष ही है और उस पर ताला लगा दिया है। बुद्धि को बोलने का स्कोप ही नहीं रहा। बुद्धि को दखल करने का स्कोप ही नहीं रहा। बुद्धि बहन वहाँ से वापस चली जाती है कि अपना अब नहीं चल रहा, घर चलो। वह थोड़े ही कुँवारी है? शादी-शुदा थी तो वह वापस वहाँ अपने ससुराल चली जाती है बहन।

**प्रश्नकर्ता :** तो दादा, क्या दोषित भी नहीं मानना है, निर्दोष भी नहीं मानना है, निर्दोष समझना है।

**दादाश्री :** सब समझना है लेकिन दोषित नहीं समझना है। यदि दोषित समझोंगे तब तो अपनी दृष्टि बिगड़ी हुई है और दोषित के साथ 'चंदूभाई' जो सिर फोड़ी करता है उसे 'हमें' देखते रहना है। 'चंदूभाई' को (फाइल नं-वन को) 'हमें' रोकना नहीं है।

**प्रश्नकर्ता :** वह क्या कर रहा है, हमें वह देखते रहना है?

**दादाश्री :** बस, देखते रहो क्योंकि दोषित के साथ दोषित अपने आप ही झंझट करता है। लेकिन ये 'चंदूभाई' भी निर्दोष हैं और वह भी निर्दोष है। दोनों लड़ते हैं लेकिन दोनों ही निर्दोष हैं।

## फाइल नं-वन का निबेड़ा लाओ यों

**प्रश्नकर्ता :** अगर चंदूभाई दोषित हों फिर भी सूक्ष्म दृष्टि से वह निर्दोष ही है।

**दादाश्री :** सूक्ष्म दृष्टि से वह निर्दोष ही है लेकिन चंदूभाई के साथ आपको जो कुछ भी करना हो, वह करना। बाकी, जगत् के संबंध में तो मैं सभी को 'निर्दोष हैं,' ऐसा मानने को कहता हूँ। चंदूभाई को आपको टोकना पड़ेगा कि 'ऐसे चलोगे तो नहीं चलेगा। उसे शुद्ध फूड देना है। अशुद्ध फूड से यह जो दशा हो गई है तो शुद्ध फूड से उसका निबेड़ा लाने की ज़रूरत है।'

**प्रश्नकर्ता :** वह कुछ उल्टा-सीधा करे तो प्रतिक्रमण करने को कहना पड़ेगा?

**दादाश्री :** हाँ, वह सभी कुछ कहना पड़ेगा। उसे कह भी सकते हैं, 'आप नालायक हो'। सिर्फ चंदूभाई के लिए ही, औरों के लिए नहीं क्योंकि वह आपकी फाइल नंबर-वन, आपकी खुद की है। दूसरों के लिए नहीं।

**प्रश्नकर्ता :** अगर फाइल नं-वन दोषित हो तो उसे दोषित मानना और डाँटना चाहिए?

**दादाश्री :** डाँटना। प्रेजुडिस भी रखना उस पर कि 'तू ऐसा ही है, मैं जानता हूँ।' उसे डाँटना भी सही क्योंकि हमें उसका निबेड़ा लाना है अब।

## जगत् की हकीकत भगवान की दृष्टि से

किसी चीज़ के लिए अभिप्राय नहीं रहना चाहिए। अभिप्राय यानी आपने उसका अनुमोदन किया। जो गलत है उसे गलत 'जानना', जो सही है उसे सही 'जानना।' गलत पर किंचित्मात्र भी

द्वेष नहीं और सही पर किंचित्मात्र भी राग नहीं। सही-गलत होता ही नहीं। सही-गलत, वह द्वंद्व है, भ्रांत दृष्टि है, सामाजिक स्वभाव है। भगवान की दृष्टि में ऐसा नहीं है। भगवान की दृष्टि में तो टेबल पर खाना खाने वाला और संडास जाने वाला दोनों एक समान है।

भगवान के घर कोई कीमत नहीं है। आप मारो-पीटो या खून करो फिर भी भगवान के घर उसकी कोई कीमत नहीं है। यह सब तो सामाजिक दृष्टि है। यह जगत् भ्रांति दृष्टि से है। राइट (सही) दृष्टि से ऐसा कुछ है ही नहीं। जिनके पास राइट दृष्टि है, वे राइट दृष्टि वाले भगवान है। इसे भी देखते रहते हैं। मारने वाले को भी देखते रहते हैं और शादी करवाने वाले को भी देखते रहते हैं। विधुर बनाने वाले को भी देखते रहते हैं और शादी करवाने वाले को भी देखते रहते हैं। उनके लिए वैधव्य और विवाह दोनों समान ही हैं क्योंकि दोनों दृश्य हैं और इनके लिए वैधव्य और विवाह दोनों सामाजिक चीज़ हो गई हैं। यह शादी और यह वैधव्य कहलाता है। शादी के समय उछल-कूद करना और नाचना-गाना और वैधव्य के समय रोना, दोनों लौकिक हैं। भगवान के घर पर इसकी कोई वैल्यू ही नहीं है। यह सब तो दृष्टि है। जैसी उसकी दृष्टि होगी वैसा दिखाई देगा इसलिए दृष्टि बदलने के लिए कहते हैं।

## साफ दृष्टि से साफ वातावरण

**प्रश्नकर्ता :** भगवान को ऐसा है ही नहीं, कि 'क्या गलत है और क्या सही', फिर प्रश्न ही खड़ा नहीं होता।

**दादाश्री :** वह भगवान की दृष्टि से है लेकिन यहाँ पर प्रश्न उठते हैं। जब तक हम भगवान नहीं बने हैं, तब तक गुनहगार हैं।

**प्रश्नकर्ता :** लेकिन फिर तो सही क्या और गलत क्या, वह प्रश्न गौण हो जाता है न?

**दादाश्री :** नहीं। लेकिन खेद तो होना ही चाहिए। ये शब्द मैं दुरुपयोग करने के लिए नहीं बोल रहा हूँ। मैं जो बोल रहा हूँ वह इसलिए बोल रहा हूँ कि आपको 'बोदरेशन' (भार, परेशानी) नहीं रहे। किसी के मन में ऐसा नहीं हो कि, 'मुझे कर्म बंधेंगे', इसलिए खुलकर कह रहा हूँ। नहीं तो मैं भी छान-छानकर नहीं बोलता कि, 'कर्म तो बंधेंगे, यदि आप कभी ऐसा नहीं करो तो।'

भगवान ने सभी को निर्दोष देखा। उन्होंने किसी को भी दोषित नहीं देखा। जब अपनी दृष्टि भी ऐसी साफ हो जाएगी, तब वातावरण भी साफ हो जाएगा। फिर सारा संसार बगीचे जैसा लगता रहेगा। वास्तव में लोगों में कुछ भी दुर्गंध नहीं है लोग खुद अभिप्राय बाँधते हैं। हम हर किसी की बात करते हैं लेकिन हमें किसी के लिए कोई अभिप्राय नहीं होता कि वह ऐसा ही है!

## छूटेंगे ऐसी दृष्टि से

हम तो आपसे कहते हैं न कि, सावधानीपूर्वक चलो, पागल कुत्ता अंदर घुस जाएगा, ऐसा लगे कि तुरंत ही 'अपना' दरवाज़ा बंद कर दो। परंतु उस पर यदि आप ऐसा कहो कि 'यह पागल ही है' तो वह अभिप्राय डाला कहा जाएगा।

भगवान का अलौकिक ज्ञान तो क्या कहता है कि किसी पर आरोप भी मत लगाना, किसी के लिए अभिप्राय मत बनाना, किसी के लिए कोई भाव ही मत करना। 'जगत् निर्दोष ही है!' ऐसा जानोगे तो छूट जाओगे। जगत् के तमाम जीव निर्दोष ही हैं और सिर्फ मैं ही दोषित हूँ,

मेरे ही दोषों के कारण मैं बंधा हुआ हूँ, ऐसी दृष्टि हो जाएगी, तब छूटा जा सकेगा।

जब तक खुद के दोष नहीं दिखते और दूसरों के ही दोष दिखते रहते हैं, जब तक वैसी दृष्टि है तब तक संसार खड़ा रहेगा। और जब औरों का एक भी दोष नहीं दिखेगा और खुद के सभी दोष दिखेंगे, तब समझना कि मोक्ष में जाने की तैयारी हुई, बस दृष्टि में इतना ही फर्क है!

## निरंतर परिवर्तनशील जगत्

यहाँ पर अगर कोई जेबकतरा हो तो वह जेब काटता है। जेब काटता है, वह हकीकत है। जब वह जेब काटता है उस समय सोलह अवधान रहते हैं, वह भी हकीकत है। कब निकलना, किस तरह से काटना, कौन सी जेब काटनी, किस समय पर काटनी, कब भाग जाना, कहाँ से बचकर निकल जाना, वहाँ पुलिस वाले खड़े हैं, सब कुछ उसके *लक्ष* (जागृति) में ही रहता है एट ए टाइम, ऑन द मोमेन्ट (उसी क्षण) ध्यान में रहता है। अटेन्शन। अब उस व्यक्ति की जेब में से तीस रुपए ही निकले और फिर थोड़ी दूर तक गया तो वहाँ पर एक कोढ़ी (रक्तपित का रोगी) दिखा और फिर उस कोढ़ी को दस रुपए दे दिए। अरे, भाई इतना बड़ा सौदा किया! ऐसे तो सेठ भी नहीं देते हैं फिर तूने इतने ज़्यादा क्यों दे दिए? वापस घर आया तो देखा कि मामा की बेटी आयी हुई है, 'बहन, मैंने तुझे कभी भी पैसे नहीं दिए। ले, तू ये बीस रुपए ले जा।'

ऐसे व्यक्ति पर आप किस प्रकार का पूर्वाग्रह रखोगे? मनुष्य का स्वभाव किस टाइम पर क्या करेगा, उसका क्या पता? किसी भी प्रकार का पूर्वाग्रह नहीं रख सकते। हमें एक पल के लिए भी पूर्वाग्रह नहीं रहता। हम ऐसा मानते हैं कि सारा संसार ऐसा ही है।

प्रेजुडिस तो बहुत सारे होते हैं न? अगर किसी को 'ऐसा है', यों मान बैठें तो फिर वह हमेशा हमें वैसे का वैसा ही दिखाई देगा। वास्तव में वह ऐसा नहीं होता है। हर एक व्यक्ति में, प्रत्येक सेकन्ड में परिवर्तन होता ही रहता है। सारा संसार ही परिवर्तन वाला है। निरंतर परिवर्तन होता ही रहता है।

## पूर्वाग्रह को पोषण देने वाले गुनहगार

यह लट्टू किस आधार पर घूमता है, वह हम नहीं जानते हैं इसलिए हमारी अपनी धारणा की वजह से पूर्वाग्रह बन जाते हैं। धारणा से पूर्वाग्रह चलता रहता है। हमने मान लिया कि यह ऐसा ही है। जिस समय माना कि यह ऐसा ही है, उस समय तुरंत ही उस पर उसका असर हो जाता है। आपके पूर्वाग्रह की वजह से सामने वाला बिगड़ जाता है। पूर्वाग्रह को पोषण देने वाला ही गुनहगार है इसलिए पूर्वाग्रह बनाने वाला ही ज़िम्मेदार है। कभी तो ऐसा भी होता है कि सामने वाला समाधान करने आता है और पूर्वाग्रह के आधार पर वह उस पर टूट पड़ता है।

सभी लट्टू हैं, वे उदय के अनुसार घूमते रहते हैं। अच्छा उदय आए तो अच्छी तरह से घूमता है, बुरा उदय आए तो उल्टी तरह से घूमता है। उस समय जो पूर्वाग्रह बना दिए जाते हैं, वे फिर कभी भी नहीं जाते इसीलिए यह संसार कायम है। इसमें सामने वाले का दोष नहीं है। अपने में पूर्वाग्रह भरे पड़े हैं। भीतर पूर्वाग्रह करवाने वाले भावक पड़े हुए है। हर एक जीव अपने परिणाम के अनुसार ही घूमता रहता है, वहाँ आप क्या करोगे?

## पूर्वाग्रह की वजह से मोक्षमार्ग में अंतराय

पूर्वाग्रह तो रखना ही नहीं चाहिए। अच्छे लोगों को, संसार के लोगों को भी पूर्वाग्रह नहीं रखने चाहिए क्योंकि आज अगर आपके किसी कर्म के उदय के आधार पर आपने मेरे लिए दो खराब वाक्य कह दिए। तब मैं अगर आपके लिए ग्रह बनाऊँ तो वह मेरी भूल है। क्योंकि जब उदय खराब हो तब उल्टा हो जाता है। फिर दूसरे दिन भी ऐसा मानना कि आप ऐसा ही बोलोगे, तो वैसा नहीं होना चाहिए। वह गलत है। पूर्वाग्रह तो रखना ही नहीं चाहिए।

कर्म के उदय की वजह से वह बेचारा बोल रहा है। और यह जो चोरी कर रहा है, वह भी कर्म के उदय की वजह से ही चोरी कर रहा है। संभव है, कल न भी करे इसलिए हम अपने पूर्वाग्रह के आधार पर ऐसा नहीं मान सकते। सावधान रहने में हर्ज नहीं है लेकिन पूर्वाग्रह नहीं रखना चाहिए। पूर्वाग्रह तो आपके मोक्षमार्ग में सब से बड़ा अंतराय (बाधक) है।

## ज्ञान के बाद बचा 'चारित्रमोह'

**प्रश्नकर्ता :** अर्थात् वास्तव में तो चोरी की सारी क्रिया कर्म के उदय के अधीन है।

**दादाश्री :** उदय के अधीन है।

**प्रश्नकर्ता :** वास्तव में वह खुद इसमें नहीं है।

**दादाश्री :** वास्तव में वह नहीं करता।

**प्रश्नकर्ता :** लेकिन उसकी बिलीफ में भूल है।

**दादाश्री :** बिलीफ में ही भूल है। वास्तव में तो वह ऐसा मानता है कि वह खुद कर रहा है इसीलिए वह मोह है जबकि हम इसके कर्ता नहीं हैं इसलिए वह चारित्रमोह है। यदि वह भी इसका कर्ता नहीं बने तो वह चारित्रमोह है। व्यवहार में तो इसे मोह कहते हैं न! सिनेमा देखने जाना, वह? अरे, दाढ़ी बनाता है, वह भी मोह है। खुद कर्ता नहीं है, व्यवस्थित कर्ता है इसलिए उसे स्पर्श नहीं होता। आपने ऐसा रखा है न कि व्यवस्थित कर्ता है?

**प्रश्नकर्ता :** जी हाँ।

**दादाश्री :** व्यवस्थित के साथ तालमेल बैठता है?

**प्रश्नकर्ता :** जी, हाँ।

**प्रश्नकर्ता :** सामने वाले को चोर देखना भी चारित्रमोह के विभाग में जाता है?

**दादाश्री :** चोर देखना... चोर देखकर चोर मानना, वह चारित्रमोह नहीं कहलाता। उसे चोर देखते हो, वह चारित्रमोह है।

'स्वरूप ज्ञान' के बाद जो 'चारित्रमोह' रहता है, वह वापस संसार के बीज नहीं डाल सकता लेकिन जब तक रहता है तब तक 'समाधि सुख' उत्पन्न नहीं होता!

## 'निर्दोष' अभिप्राय से शुद्ध उपयोग

**प्रश्नकर्ता :** आप्तसूत्र में आपका एक वाक्य है कि 'किसी का दोष देखना, वह चारित्रमोह नहीं है।'

**दादाश्री :** हाँ, ठीक है। वे सारी बातें तो सापेक्ष हैं। किसी अपेक्षा से चलेगा। इसलिए दोष दो प्रकार से देखने हैं। दोषित भी माने और निर्दोष भी माने, दोनों प्रकार से माने तो अलग बात है।

**प्रश्नकर्ता :** दोनों प्रकार से कैसे मान सकते हैं?

**दादाश्री :** वह खुद दोष नहीं करता और

उसे दोषित मानोगे? जहाँ खुद नहीं कर रहा है, उसी भाग में दोषित मानते हैं। संसार के लोग उसे दोषित ही कहते हैं न? इसी तरह हम भी व्यवहार से कहते हैं, हमारे मन में ऐसा नहीं रहता। वह निर्दोष है, वह खुद कर्ता नहीं है, इसलिए निर्दोष है।

मोक्ष के विज्ञान में 'मैं कर रहा हूँ, तू कर रहा है, या वे कर रहे हैं' नहीं है। इसलिए अगर 'मैं शुद्धात्मा हूँ' तो कोई कर्ता नहीं दिखना चाहिए न और 'शुद्धात्मा हूँ' का शुद्ध उपयोग रहा ऐसा कब कहा जाएगा? कि, 'सारा संसार निर्दोष है' ऐसा अपने अभिप्राय में रहना चाहिए। वर्तन चाहे कैसा भी हो लेकिन अभिप्राय में यही रहना चाहिए कि शुद्धात्मा ही है।

इन आँखों से लालचंद दिखाई देते हैं और (अंदर वाली) आँखों से शुद्धात्मा है। उसके बाद आपको अब अशुद्ध देखने का रहा ही कहाँ? वही शुद्ध उपयोग है और ऐसा उपयोग रहने से समता ही रहेगी।

## शुद्ध में रहकर 'शुद्ध' ही देखो

हमने जो रास्ता बताया है, उसमें नहीं चुकना, तो उसी को शुद्ध उपयोग कहेंगे। मैं शुद्धात्मा हूँ और दूसरों में भी शुद्ध ही देखूँ। भीतर यदि बुद्धि अशुद्ध दिखाए कि वह ऐसा है, वैसा है तो हमें वह नहीं देखना है, 'मुझे क्या लेनादेना? उसकी अशुद्धता से मुझे क्या लेनादेना? सभी के घर में कूड़ादान रहता है, गटर रहता है, संडास रहता है, मुझे उनसे क्या लेनादेना?'

हमें तो रियल में क्या है, वही देखते रहना है। बाहर की पैकिंग को देखने की ज़रूरत नहीं है। पैकिंग को देखने से ही उलझन हो गई है। आप सिर्फ रियल को ही देखते रहना। फिर उनके मन में ऐसा होगा कि यह क्या है? इस व्यक्ति ने मुझ पर कुछ जादू कर दिया है?!

इसलिए मेरा कहना है कि अब आप उसके शुद्धात्मा ही देखो। लोग वैसे नहीं होते, उनकी पैकिंग वैसी है। उनका आत्मा शुद्ध है। हर एक व्यक्ति को आप आत्मरूप से देखना। यदि कोई परेशान करने वाला व्यक्ति हो तो उसे आत्मरूप से देखना और परेशान नहीं करे तब सरल व्यवहार करना, वहाँ तो सेफ साइड है ही! जबकि यहाँ तो सावधान रहना है! इसलिए आप इस तरह से देखना यह हमारी आज्ञा है! फिर उसे भी संतोष रहेगा और आपको भी संतोष रहेगा।

## 'शुद्धात्मा' के अलावा कोई अभिप्राय नहीं

सामने वाले के लिए कितने अभिप्राय रखने हैं? सिर्फ इतना ही कि शुद्धात्मा है। सफेद बाल हैं या काले, हम क्या गिनने जाते हैं कितनी चीज़ें गिनने का कहते हैं?

**प्रश्नकर्ता :** नहीं।

**दादाश्री :** सामने वाला, स्त्री है या पुरुष उससे हमें क्या मतलब है? आप तो आत्मा देखो न! बूढ़ी है या जवान, उसकी क्या ज़रूरत है? और अगर देखना है तो पूरा देखो। सिर्फ, जवानी ही क्यों देखते हो?

**प्रश्नकर्ता :** हाँ, हड्डी-चमड़ी वगैरह सब देखो।

**दादाश्री :** इस तरह से देखना हो तो पूरा ही देखो।

वह तो ऐसा ही है, यह जो समझ है, वह अभिप्राय है, वह नहीं बनाना। एक बार

शुद्धात्मा वाला अभिप्राय बना दिया फिर दूसरा अभिप्राय क्यों बनाते हो? हमें तो एक ही अभिप्राय बनाना है कि ये शुद्धात्मा है लेकिन और कोई अभिप्राय नहीं बनाना है। फिर भले ही उनके पास अलग-अलग प्रकार की अनेक डिग्रियाँ हों।

## अभिप्राय निकालने के लिए ज़रूरत है जागृति की

इसलिए अब अभिप्राय मत देना। 'यह अच्छा व्यक्ति आया, यह बुरा व्यक्ति आया', किसी को कोई अभिप्राय नहीं दोगे तो मन बंद हो जाएगा। यह सब से सरल रास्ता है।

अभिप्राय से यह मन बना है और यदि अभिप्राय देना बंद कर दे तो मन बंद हो जाएगा। मेरा किसी के प्रति ज़रा भी अभिप्राय नहीं है कि ये भाई अच्छे हैं और ये बुरे हैं, ऐसा कुछ भी नहीं है। गाली दें फिर भी बुरा नहीं और फूल चढ़ाएँ तब भी अच्छे नहीं। जिसे अभिप्राय नहीं होंगे उसे प्रेजुडिस तो होंगे ही नहीं न। आपको क्या लगता है?

**प्रश्नकर्ता :** ठीक है।

**दादाश्री :** जबकि आपको तो अभिप्राय और प्रेजुडिस परेशान करते हैं। वे आपको चुभते रहते हैं, रात को भी कचोटते हैं।

**प्रश्नकर्ता :** लेकिन उसका रास्ता क्या है?

**दादाश्री :** अभिप्राय देना बंद कर दो। मैंने रास्ता बताया है न लेकिन उसके लिए जागृति की ज़रूरत है। अभिप्राय बनाओगे तभी प्रेजुडिस होगा न?

## ज्ञान के उपयोग से हो सकते हैं, अभिप्राय रहित

**प्रश्नकर्ता :** संपूर्ण रूप से अभिप्राय रहित कैसे हो सकते हैं?

**दादाश्री :** आपको यह अभिप्राय रहित ज्ञान ही दिया है। बाइ रियल व्यू पोइन्ट, वह 'शुद्धात्मा' है और बाइ रिलेटिव व्यू पोइन्ट, वह 'नगीन भाई' है। रिलेटिव सिर्फ कर्म के अधीन होने से 'नगीन भाई' भी निर्दोष हैं। यदि वे स्वाधीन होते तो 'वे' दोषित कहलाते लेकिन 'वे' बेचारे लट्टू जैसे हैं। अत: वे निर्दोष हैं। यों शुद्धात्मा हैं और बाहर का निर्दोष है। अब बोलो, वहाँ पर अभिप्राय रहित ही रहना चाहिए न!

## छुटकारा प्रतिक्रमण द्वारा

**प्रश्नकर्ता :** पहले यह सब उल्टा हो गया हो या खुद के अभिप्राय बन गए हो तो उन सब को किस तरह से धोना है?

**दादाश्री :** वह तो जिस टाइम पर हो चुका है, वापस उस टाइम में तो नहीं जा सकते।

**प्रश्नकर्ता :** यदि ऐसा कोई कर्म बंध जाए तो उससे छुटकारा किस तरह से हो सकता है?

**दादाश्री :** वह या तो भुगतने पर ही होगा या फिर अगर ज्ञानीपुरुष मिल जाएँ तब वे थोड़े बहुत नाश कर देंगे। कुछ प्रकार के नाश हो जाते हैं, सभी प्रकार के नाश नहीं होते। जो पानी जैसे और भाप जैसे होते हैं उनका तो नाश हो जाता है लेकिन जो बर्फ जैसे हैं, उनका नाश नहीं होता। बर्फ अर्थात जमे हुए। प्रतिक्रमण से बहुत से नष्ट हो जाते हैं इसलिए शूट ऑन साइट करना है।

**प्रश्नकर्ता :** यदि कोई पूर्वाग्रह या अभिप्राय बहुत पक्का हो गया हो तो बार-बार प्रतिक्रमण करने से वह धुल जाएगा क्या?

**दादाश्री :** हाँ, प्रतिक्रमण करते रहने से तो सब धुल जाता है। पूर्वाग्रह क्यों हो जाता है? तब कहते हैं, 'उसी का आराधन किया।' अतिक्रमण ही किए हैं। प्रतिक्रमण करने से वे धुल जाएँगे।

## पूर्वाग्रह छूटते ही बन जाता है परमात्मा

यदि मनुष्य पूर्वाग्रह रहित हो जाए तो परमात्मा बन सकता है। भगवान कहते हैं कि कल जिसने लूट लिया था, वही व्यक्ति आज सामने से आ रहा हो तो भी पूर्वाग्रह मत रखना। संभव है कि आज वह वापस लौटाने आ रहा हो। लूटने आ रहा है या और कुछ करने आ रहा है वह क्या पता? अत: हम पूर्वाग्रह नहीं रखते। पूर्वाग्रह रखना, वह गुनाह है क्योंकि आप ज्ञानी नहीं हो कि उसका वह भाव समझ सको। कई बार ऐसे लोग आते हैं कि आपको लगता है, 'उसके आते ही मैं अकुला गया तो मैं उसे ऐसा ही कहने वाला था कि 'देखा भाई! क्या काम है यहाँ?' लेकिन अच्छा हुआ, ऐसा नहीं कहा। यह व्यक्ति तो कुछ और ही निकला, ऐसा बहुत बार होता है या नहीं?

**प्रश्नकर्ता :** होता है।

**दादाश्री :** इसलिए आप किसी भी जगह पर पूर्वाग्रह मत रखना। व्यक्ति हर क्षण बदलता रहता है क्योंकि वह खुद के स्वाधीन नहीं है न!

आपको समझ में आया? आपने ग्रहों की यह जो सूक्ष्म बात पूछी है। इस बात से सभी ग्रह निकल जाते हैं और पूर्णत: सुखी हो जाते हैं। जिनके ये ग्रह चले गए, वही परमात्मा हैं।

## हमारी भूलें ही हमारी ऊपरी

इन नौ ग्रहों की स्थिति समझ में आ गई न? यदि अपने अंदर होंगे तो बाधा डालेंगे? अपने ही गुनाह है इसीलिए ये ग्रह बाधा डालते हैं, बाकी इन ग्रहों को आपके लिए फुर्सत नहीं हैं। ये पुलिस वाले क्या फुर्सत में होते हैं?

**प्रश्नकर्ता :** नहीं दादा।

**दादाश्री :** यदि आपका गुनाह नहीं है तो कोई नाम ही नहीं ले सकता न! आपका गुनाह होने की वजह से वे आपके *ऊपरी* (बॉस) हुए। ये भूलें ही आपकी *ऊपरी* हैं, बाकी कोई *ऊपरी* नहीं है। भूल नहीं करो तो कोई *ऊपरी* नहीं है।

## यह तो है क्रियाकारी विज्ञान

यह तो विज्ञान है। विज्ञान तो साफ ही रहता है। जब समझ में आ जाए, तभी से अमल में आ ही जाता है। अब यह बात सुनी न, तो आपके ये ग्रह निकलने लगेंगे। जब ऐसा समझ में आ जाएगा कि इसमें नुकसान है, तभी से छोड़ने लगेगा लेकिन ऐसा प्रतीति में आना चाहिए कि यह गलत है। यर्थाथ रूप से समझ में आ जाना चाहिए।

**प्रश्नकर्ता :** इस विज्ञान की परिभाषा ही है, पूर्वाग्रह का विरोधी।

**दादाश्री :** पूर्वाग्रह नहीं। सभी ग्रहों का विरोधी है। सभी ग्रहों से विरुद्ध। वीतराग तो निराग्रही थे। ग्रह वगैरह कुछ भी बाधा नहीं डालते। जो नौ ग्रह बाधा डालते हैं न, उनमें पूर्वाग्रह भी आ गया। अरे भाई! मैंने सोचा था क्या और तू निकला क्या? ऐसा होता है या नहीं? अत: ये सभी पूर्वाग्रह बाधक हैं। तो क्या अब पूर्वाग्रह रखोगे?

**प्रश्नकर्ता :** नहीं...

**दादाश्री :** हमारे कहे अनुसार रहने से संसार ठीक तरह से चलेगा और मोक्ष में भी जा सकोगे। इतना सुंदर विज्ञान है यह! और हर क्षण इस विज्ञान का उपयोग हो सकता है लेकिन विज्ञान का उपयोग करना आना चाहिए।

**जय सच्चिदानंद**

## दादाई जगकल्याण मिशन - सत्संग हाइलाईट्स

**26-28 मार्च :** पूज्यश्री के UK आगमन के समय 300 स्थानीय महात्माओं ने उल्लासपूर्वक उनका स्वागत किया। UK सत्संग की शुरुआत JJ-111 किक ऑफ इवेन्ट से हुई, उसमें 550 महात्माओं ने पूज्यश्री के साथ डिनर किया। इस अवसर पर पूज्यश्री द्वारा केक काटा गया। पूज्यश्री रायस्लिप सेन्टर में 'सेल द सेवन सीज ऑफ पॉज़िटिविटी' प्रदर्शनी देखने गए।

**29 मार्च - 2 अप्रैल :** UK शिविर का आयोजन विशेष रूप से महात्माओं के लिए पोन्टीस-पेकफील्ड में किया गया था। इस शिविर में 850 महात्मा उपस्थित थे। जिसमें 100 बच्चे और युवा थे। इस साल JJ-111 का आयोजन दुनिया भर के महात्माओं द्वारा अडालज में होने की वजह से सभी में एक अलग प्रकार का उत्साह देखने को मिला। इन्द्र धनुष के रंगों वाले हार्ट के आकार के प्रतीक से स्टेज के चारों तरफ सजावट की गई थी, जो एकता, अभेदता और प्रेम सूचित कर रहे थे। इस शिविर में 'गुरु शिष्य' बुक का पारायण तथा स्पेशल टॉपिक 'मोह आवश्यक-अनावश्यक चीज़ों का' तथा 'अदीठ तप का पुरुषार्थ' पर पूज्यश्री के सत्संग हुए थे। इस साल JJ-111 और पूज्य नीरू माँ के ज्ञान प्राप्ति के 50 वर्ष पूरे होने के अवसर पर कार्निवल परेड का आयोजन हुआ। उसमें पूज्यश्री के साथ महात्मा और बच्चे भी सम्मिलित थे। इस कार्यक्रम में महात्माओं को गरबा खेलने का अवसर भी मिला। वहाँ पर JJ-111 के केक का प्रदर्शन हुआ। GNC के बच्चों ने भी पूज्यश्री के साथ सत्संग का लाभ लिया। पूज्यश्री द्वारा JJ-111 का लोगो और 'देखने जैसी दुनिया' इवेन्ट लोगो का अनावरण हुआ। शिविर में 80 बच्चों ने सांस्कृतिक कार्यक्रम में भाग लिया।

**6-8 अप्रैल :** लेस्टर में पूज्यश्री के तीन दिनों के सत्संग, ज्ञानविधि कार्यक्रम का आयोजन हुआ। सत्संग से पहले GNC के बच्चों द्वारा पूज्यश्री का स्वागत हुआ। पूज्यश्री ने GNC के बच्चों द्वारा निर्मित 'एकता' प्रदर्शनी की मुलाकात ली । प्रदर्शनी में सब से पहले त्रिमंदिर दिखाया गया था, जिसमें सभी भगवान एक हैं यह बात दर्शाई गई थी। दूसरे भाग में दिखाया कि इस काल में मन-वचन-काया की एकता नहीं है और यदि दादा की पाँच आज्ञा में रहेंगे तो महाविदेह क्षेत्र जा सकते हैं, जहाँ पर चौथे *आरे* में मन-वचन-काया की एकता है। और अंत में, जिस तरह श्री सीमंधर स्वामी, परम पूज्य दादाश्री, पूज्य नीरू माँ तथा पूज्यश्री सभी ने जगत् कल्याण के कार्य एकता दर्शाई है, उसी तरह की एकता हम सभी में भी होनी चाहिए, यह सुंदर संदेश, इस प्रदर्शनी के द्वारा दिया गया। सत्संग में 500 महात्मा-मुमुक्षु उपस्थित थे। मुमुक्षुओं द्वारा अक्रम विज्ञान और आत्मा से संबंधित अच्छे प्रश्न पूछे गए, जिनके समाधान के लिए पूज्यश्री द्वारा जवाब दिए गए। सात अप्रैल को आप्तपुत्र द्वारा सभी महात्माओं के साथ PMHT सत्संग हुआ। रविवार सुबह, 'आत्मज्ञान लेना क्यों ज़रूरी है' इस विषय पर मुमुक्षुओं के लिए सत्संग हुआ। ज्ञानविधि में 150 मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान प्राप्त किया। पूज्यश्री ने महात्माओं के साथ इन्फॉरमल समय बिताया, जिसमें डिब्बा पार्टी, म्यूज़ियम की मुलाकात जैसे कार्यक्रम शामिल थे। स्थानीय महात्माओं ने 'दादा दरबार' में पूज्यश्री से अपनी उलझनों के लिए व्यक्तिगत मार्गदर्शन प्राप्त किए।

**9-10 अप्रैल :** नोर्थ UK के बर्मिंगहाम में बहुत समय बाद पूज्यश्री का सत्संग, ज्ञानविधि का कार्यक्रम हुआ। सत्संग में महात्माओं द्वारा पूज्यश्री से आहार के बारे में प्रश्न पूछे गए, जिनका पूज्यश्री ने बहुत ही निखालसता से जवाब दिए। ज्ञानविधि में 40 मुमुक्षओं ने आत्मज्ञान प्राप्त किया। इस सत्संग कार्यक्रम से बर्मिंगहाम के स्थानीय महात्माओं को बहुत पृष्टि मिली।

**13-16 अप्रैल :** लंदन में हेरो में पूज्यश्री के चार दिनों के सत्संग व ज्ञानविधि का कार्यक्रम हुआ। महात्माओं व मुमुक्षुओं की उपस्थिति से सत्संग हॉल पूरी तरह से भर गया था। LMHT और BMHT के बच्चों ने हॉल में पूज्यश्री का स्वागत किया। इन्द्र धनुष की थीम पर स्टेज की सजावट की गई थी। पूज्यश्री द्वारा सत्संग में मन और वाणी के संयोग, फाइल नंबर एक से जुदापन की जागृति किस तरह से रखनी है, आज्ञा वही धर्म और आज्ञा वही तप तथा अक्रम विज्ञान-सार तमाम शास्त्रों का इन सभी टॉपिक पर अच्छे विश्लेषण द्वारा, महात्माओं एवं मुमुक्षुओं के प्रश्नों के समाधान दिए। दूसरे दिन पूज्यश्री GNC के बच्चों द्वारा सेवा की थीम पर बनाई गई प्रदर्शनी देखने गए। जिसमें, हमें सेवा क्यों करनी चाहिए? उसका महत्व, सेवा करने से क्या मिलता है? हमें सेवा किस तरह से करनी चाहिए वगैरह पर सुंदर प्रदर्शन किया था। शाम के सत्संग में पूज्यश्री ने भारतीय संस्कृति, पाश्चात्य संस्कृति, जुदापना और आईना सामायिक तथा अपने परिवार के सदस्यों, जो कि गुज़र चुके हैं, उनके लिए प्रार्थना, उन सब पर सुंदर सत्संग हुआ। 15 अप्रैल को ज्ञानविधि में 256 मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान प्राप्त किया। पूज्यश्री द्वारा हुए फॉलोअप सत्संग में बहुत से ज्ञान प्राप्त किए नए महात्माओं, पाँच आज्ञा का पालन कैसे किया जाए यह समझने के लिए आए थे। महात्माओं को व्यक्तिगत मार्गदर्शन मिले, इस उद्देश्य से 'दादा दरबार' का आयोजन हुआ। 300 महात्माओं ने इसका लाभ लिया। सेवार्थियों के लिए स्पेशल सत्संग का आयोजन हुआ, जिसमें 200 सेवार्थी सम्मिलित हुए। इस अवसर पर सेवार्थियों को पूज्यश्री के सत्संग-दर्शन का लाभ मिला। सेवार्थियों द्वारा पूज्यश्री के 66वें जन्मदिन एडवान्स में मनाया गया।

**20-23 अप्रैल :** इस वर्ष भी जर्मनी के विलिंगन में 'अक्रम विज्ञान इवेन्ट' का आयोजन हुआ। यह जगह सुविधाजनक तथा प्राकृतिक सौंदर्य से भरपूर है। यूरोप व अन्य विभागों के विविध देशों से महात्माओं एवं मुमुक्षुओं ने इसमें भाग लिया। इस साल शिविरार्थियों की संख्या 700 थी। इसका राज़ बताते हुए वहाँ के सेवार्थियों ने कहा कि उन्होंने पूज्यश्री की सलाह के अनुसार, प्रत्येक सप्ताह और हर एक मीटिंग से पहले 'दादा भगवान के असीम जय-जयकार हो' किए थे। जिससे कि वहाँ आनेवाले सभी महात्माओं-मुमुक्षुओं के अंतराय टूट जाएँ। इवेन्ट के दौरान GNC ग्रुप के बच्चों के साथ सत्संग हुआ। शिविरार्थियों के लिए सत्संग, दर्शन, गरबा, मूर्ति प्रतिष्ठा विधि का आयोजन किया गया। अंग्रेज़ी पुस्तक 'सायन्स ऑफ कर्मा' पर पारायण हुआ। पूज्यश्री ने विविध उदाहरणों द्वारा जर्मन महात्माओं के कर्म की थ्योरी पर पूछे गए प्रश्नों के जवाब दिए। ज्ञानविधि में 270 मुमुक्षुओं ने ज्ञान प्राप्त किया। 30 बच्चों-युवानों तथा 140 सेवार्थियों ने सेवा दी! आप्तवाणी-8, दादा भगवान कौन? और दादावाणी 'ज्ञानी हमेशा अंत:करण से जुदा बरतते हैं' जिसका जर्मन भाषा में भाषांतरण हुआ हैं, उसका विमोचन पूज्यश्री द्वारा हुआ।

**9-13 मई :** PMHT शिविर की शुरुआत पूज्यश्री के 66 वें जन्मदिन से हुई। पहले दिन 'पति-पत्नि मित्र बनकर रहो' टॉपिक पर सत्संग, पति-पत्नि का दिव्य व्यवहार' बुक पर पारायण एवं प्रश्नोत्तरी हुई। रात में YMHT गर्ल्स द्वारा 65 विविध गुणों के डिस्प्ले के साथ पूज्यश्री का स्वागत हुआ। पूज्यश्री ने जन्मदिन के निमित्त से महात्माओं से आशीर्वाद लिए और बर्थ डे केक काटा। भक्ति-संध्या में महात्मा आनंदविभोर हो गए। उसके बाद दो दिनों तक, 'माता-पिता और बच्चों का व्यवहार' फिर अगले दो दिनों तक 'पैसों का व्यवहार' बुक पर पारायण एवं प्रश्नोत्तरी सत्संग हुए। सत्संग का टॉपिक था 'संस्कार सींचकर धीरज रखो', और 'लक्ष्मी कमाने के पीछे लोभ', 'परिवार में एकता' और 'लोभ' पर एक्टिविटी भी करवाई गई। जिसमें महात्माओं को बहुत कुछ सीखने को मिला। इसके अलावा महात्माओं ने आप्तपुत्रों व आप्तपुत्रियों द्वारा ग्रुप सत्संग, व्यक्तिगत मार्गदर्शन, आप्तपुत्रों के अनुभव, टॉपिक के अनुसार स्पेशल DVD, सामायिक वगैरह का लाभ महात्माओं ने लिया। इस शिविर का लाभ 7000 महात्माओं ने लिया। शिविर में आए हुए महात्माओं के बच्चों के लिए भी अलग से शिविर का आयोजन किया गया था।

## विभिन्न सत्संग केन्द्रों में आयोजित गुरुपूर्णिमा कार्यक्रम

| सेन्टर | | समय | कार्यक्रम का पता | संपर्क |
|---|---|---|---|---|
| अजमेर | **( 29 जुलाई )** | शाम 5 से 9 | लाल बहादुर शास्त्री सामुदायिक भवन, शास्त्री नगर. | 9460611890 |
| अमरावती | **( 22 जुलाई )** | सुबह 10 से 1 | दादा भगवान सत्संग केन्द्र, कॉर्पोरेशन बेंक के नीचे, भारतीय महाविद्यालय के पास, राजापेठ. | 9422335982 |
| आगरा | **( 29 जुलाई )** | सुबह 10 से 1 | यूथ होस्टल, मरीना होटल के सामने, हरिपर्वत क्रासिंग के पास. | 9258744087 |
| आर्वी | **( 29 जुलाई )** | सुबह 10 से 1 | प्रभाकर खानके, मारुती वार्ड, मून लाइट फोटो स्टूडियो के पास, आर्वी, जि. वर्धा. | 8806552381 |
| औरंगाबाद | **( 27 जुलाई )** | शाम 5-30 से 8-30 | प्लाट नंबर-74, N3 CIDCO, हाईकोर्ट के पास, जालना रोड. | 8308008897 |
| अंजड | **( 27 जुलाई )** | सुबह 8 से 11 | दादा भगवान सत्संग सेन्टर, MG रोड, अंजड, जि.बरवानी. | 9617153253 |
| बेलगाम/ हुबली | **( 29 जुलाई )** | सुबह 9 से 4 | पाटीदार भवन, 249, गणेश मार्ग, शास्त्री नगर, **बेलगाम.** | 9945894202 |
| बेंगलोर | **( 27 जुलाई )** | शाम 5-30 से 7-30 | श्री हिराचन्द नाहर जैन भवन, नं-26, 3rd क्रोस, गाँधीनगर, सिंडिकेट बैंक के पीछे, बेंगलोर. | 9590979099 |
| भिलाई | **( 27 जुलाई )** | सुबह 10 से 5 | दादा भगवान सत्संग सेन्टर, मरोदा वोटर टेन्क के पास. | 7000177475 |
| भोपाल | **( 29 जुलाई )** | सुबह 9 से 5 | ऑडिटोरियम - कुक्कुट विकास निगम, MANIT चौक के पास, कोटरा रोड, आराधना नगर, भोपाल. | 9425190511 |
| भुवनेश्वर | **( 29 जुलाई )** | सुबह 10 से 4 | डुप्लेक्श-27, NRO सागर श्रीक्षेत्र, PO-जनला, भुवनेश्वर. | 9841008769 |
| चंडीगढ़ | **( 29 जुलाई )** | सुबह 10 से 1 | गढ़वाल भवन, साईबाबा मंदिर के पास, सेक्टर 29A. | 9872188973 |
| बिलासपुर | **( 27 जुलाई )** | शाम 4 बजे से... | B-39, पारस प्रभा, गुप्ता गली, मन्नू चौक, बिलासपुर. | 9525530470 |
| चेन्नई | **( 22 जुलाई )** | सुबह 10 से 4 | पुराना नं 142/2, 1st स्ट्रीट, पुरुस्वल्कम हाई रोड, किल्पौक. | 7200740000 |
| दमोह | **( 29 जुलाई )** | सुबह 9 से 1 | घर नं. 101, वैशाली नगर, दमोह. | 9926985853 |
| दर्यापुर | **( 27 जुलाई )** | शाम 4-30 से 7-30 | दादा भगवान सेंटर, वाल्मिकी नगर, बनोसा, जि. अमरावती. | 7218133513 |
| दिल्ली | **( 29 जुलाई )** | दोपहर 2 से 6 | शाह ओडिटोरीयम, गुजराती समाज के पास, सिविल लेन, काश्मिरी गेट मेट्रो स्टेशन के सामने. | 9810098564 |
| गाज़ियाबाद | **( 27 जुलाई )** | सुबह 10 से 2-30 | 227, सेक्टर-17-E, कोनार्क एन्क्लेव, मदर डेयरी के पास, वसुंधरा, गाजियाबाद. | 9911142455 |
| गोरखपुर | **( 27 जुलाई )** | शाम 4 से 7 | श्री दीपचन्द निषाद, ग्राम कोडरीकला, पोस्ट भीटी रावत, थाना सहजनवा, गोरखपुर. | 7800656738 |
| गुडगाँव | **( 29 जुलाई )** | शाम 4 से 7 | राधा-कृष्णा मंदिर बेसमेंट हॉल, रहेजा अटलांटिस के पास, सेक्टर-31, गुडगाँव. | 9873933544 |
| गुवाहाटी | **( 29 जुलाई )** | सुबह 11 से 2 | हाउस नं. 17, श्रीनगर, क्रिश्चियन बस्ती बस स्टॉप के पास, गुवाहाटी. | 7002847355 |
| ग्वालियर | **( 29 जुलाई )** | शाम 4 से 7 | के. एस. मेमोरियल हाई स्कूल, गायत्री विहार कोलोनी, पिन्टु पार्क, ग्वालियर. | 9425712481 |
| हैदराबाद | **( 27 जुलाई )** | शाम 5 से 8 | आमंत्रण होटल & बैंक्वेट, 1-1-11, RTC क्रोस रोड, BSNL भवन के पास, मुशीराबाद मेईन रोड, कवाडी गिदा, हैदराबाद. | 9885058771 |

## दादावाणी

| सेन्टर | | समय | कार्यक्रम का पता | संपर्क |
|---|---|---|---|---|
| इन्दौर | **( 22 जुलाई )** | सुबह 10 से 5 | दादा दर्शन, 89 B राजेन्द्र नगर, टंकी होल, मेईन रोड, रेल्वे स्टेशन के पास. | 9893545351 |
| जयपुर | **( 29 जुलाई )** | सुबह 10 से 5 | 'वर्धमान भवन', D-14A, ज्योति नगर, पानी की टंकी के पास, लालकोठी, जयपुर. | 7737806148 |
| जबलपुर | **( 27 जुलाई )** | शाम 4-30 से 8 | 5वी मंजिल, समदडीया मॉल, ग्रांड समदडीया होटल के ऊपर, सिविक सेंटर, जबलपुर. | 9425160428 |
| जालंधर | **( 27 जुलाई )** | सुबह 10 से 2 | C/O ईगल प्रकाशन कोम्पलेक्स, सेन्ट्रल मिल कम्पाउन्ड, दमोरिया पुल के पास, पुरानी रेल्वे रोड. | 9779233493 |
| जलगाँव | **( 29 जुलाई )** | शाम 4 से 7 | व्हाइट हाउस, प्लोट नं-12, गणपति नगर, रोटरी होल के पास. | 9420942944 |
| जोधपुर | **( 28 जुलाई )** | शाम 4 से 7 | कैलाश पुस्तक भंडार, जैन स्कूल हॉस्पिटल के पास, धरदा का बास, महामंदिर, जोधपुर. | 6351774386 |
| कानपुर | **( 29 जुलाई )** | दोपहर 12-30 से 6 | 123/172, C ब्लाक, गोविन्द नगर, कानपुर. | 9452525981 |
| कोलकाता | **( 29 जुलाई )** | सुबह 9-30 से 4 | श्रीमद् राजचंद्र सेन्टर, दूसरी मंजिल, 19/2/A श्यामनंदा रोड, बेलटाला गर्ल्स स्कूल के पास, भवानी पोर. | 9830080820 |
| खरगोन | **( 29 जुलाई )** | दोपहर 2 से 6 | 77, विश्वसखा कॉलोनी, खरगोन. | 9425643302 |
| लखनऊ | **( 29 जुलाई )** | शाम 4 से 7 | मधुर संगीत विद्यालय, 563/74 चित्रगुप्त नगर, आलमबाग, लखनऊ. | 8090177881 |
| मुंबई | **( 27 जुलाई )** | शाम 4 से 8-30 | त्रिमंदिर, ऋषिवन, काजुपाडा, बोरीवली-पूर्व. | 9323528901 |
| नागपुर | **( 27 जुलाई )** | शाम 5 से 8 | निर्मल नगरी, बिल्डिंग नं B2/3, फ्लैट नं 6E, शीतला माता मंदिर के पास, उमरेड रोड, नागपुर. | 7249362999 |
| नासिक | **( 29 जुलाई )** | शाम 5 से 7-30 | आर.पी. विद्यालय, निमाणी बस स्टैंड के पास, पंचवटी. | 9021232111 |
| पटना | **( 29 जुलाई )** | सुबह 10 से 6 | महाराणा प्रताप भवन, आर्य कुमार रोड, दिनकर गोलंबर के पास, पटना. | 7352723132 |
| पाली | **( 27 जुलाई )** | शाम 4-30 से 7-30 | प्रजापति समाज भवन, केसरी गार्डन, इन्दिरा कॉलोनी. | 9461251542 |
| पूणे | **( 29 जुलाई )** | सुबह 10-30 से 6 | महावीर प्रतिष्ठान स्कूल, सेलिसबरी पार्क रोड, गुलटेकडी, पुणे. | 8830627538 |
| रायपुर | **( 27 जुलाई )** | सुबह 8 से 11 | दादा भगवान सत्संग सेंटर, अशोक विहार कॉलोनी के पास, गोंदवारा, रिंग रोड नं 2, भनपुरी, रायपुर. | 9329523737 |
| सतारा | **( 28 जुलाई )** | दोपहर 2-30 से 6 | आदर्श अपार्टमेन्ट, 929 शनिवार पेठ, भावे सुपारी के पास, सतारा. | 7722051313 |
| सांगली | **( 29 जुलाई )** | दोपहर 3 से 6 | 23, श्री शक्ति, एकता कॉलोनी, मार्केट कमिटी होउसिंग सोसाइटी, न्यू रेल्वे स्टेशन के पास, सांगली. | 9423870798 |
| सोलापुर | **( 29 जुलाई )** | दोपहर 3 से 6 | निखिल थोबड़े नगर, बी-18, आयशानी बुन्लोव, अवंतिका नगर के पास, साईंझ सुपर मार्केट के पीछे, सोलापुर. | 8421899781 |
| उदयपुर | **( 27 जुलाई )** | शाम 5 से 7 | 1462, छोटी नोखा, कुम्हारोका भट्टा के अन्दर, वार्ड नं 39, उदयपुर. | 9414538411 |
| उज्जैन | **( 29 जुलाई )** | शाम 5 से 8 | 298, सेक्टर-C, विवेकानंद कॉलोनी, विवेकानंद गार्डन के सामने, उज्जैन. | 9425195647 |

## आत्मज्ञानी पूज्य नीरू माँ और पूज्य दीपकभाई के आशीर्वाद प्राप्त आप्तपुत्रों के सत्संग कार्यक्रम

**ग्वालियर** **दिनांक : 20 जुलाई** **समय :** शाम 6 से 8 **संपर्क :** 9425712481
**स्थल :** सत्कार गेस्ट हाउस, इन्कम टैक्स ऑफिस के पास, कैलाश विहार, सिटी सेन्टर, ग्वालियर.

**उज्जैन** **दिनांक : 21 जुलाई** **समय :** शाम 6 से 8 **संपर्क :** 9425195647
**स्थल :** गुजराती समाज धर्मशाला, नई सड़क, देना बैंक के पास, उज्जैन.

**इंदौर** **दिनांक : 23 जुलाई** **समय :** शाम 4-30 से 7 **संपर्क :** 8319971247
**स्थल :** दादा दर्शन, 89-B, टंकी हॉल मेइन रोड, राजेन्द्र नगर रेलवे स्टेशन के पास, इन्दौर.

**अंजड** **दिनांक : 24 जुलाई** **समय :** शाम 8 से 10 **संपर्क :** 9617153253
**स्थल :** पाटीदार समाज, अन्नपूर्णा भवन, बाय-पास रोड, अंजड.

**खरगोन** **दिनांक : 25 जुलाई** **समय :** शाम 8 से 10 **संपर्क :** 9425643302
**स्थल :** श्रीराम धर्मशाला, बस स्टैंड के पास, खरगोन.

**जबलपुर** **दिनांक : 26 जुलाई** **समय :** शाम 6 से 8 **संपर्क :** 9425160428
**स्थल :** 5वी मंजिल, समदडीया मॉल, ग्रांड समदडीया होटल के ऊपर, सिविक सेंटर, जबलपुर.

**भोपाल** **दिनांक : 28 जुलाई** **समय :** शाम 6 से 8 **संपर्क :** 9425190511
**स्थल :** जनक विहार कॉम्प्लेक्स, तीसरा माला, मेडीस्कैन सेंटर के ऊपर, एयरटेल ऑफिस के सामने, मालविया नगर.

## पूज्य नीरूमाँ को देखिए टी.वी. चैनल पर...

**भारत** ✦ **'दूरदर्शन'-मध्यप्रदेश** पर सोम से शनि दोपहर 3-30 से 4, रवि शाम 6 से 6-30 (हिन्दी में)
✦ **'दूरदर्शन'-गिरनार** हर रोज़ पर सुबह 9 से 9-30 (गुजराती में)
✦ **'अरिहंत'** पर हर रोज़ सुबह 3 से 3-30 तथा शाम 5 से 5-30 (गुजराती में)

**USA-Canada** ✦ **'TV Asia'** पर हर रोज, सुबह 7-30 से 8 EST (गुजराती में)
✦ **'SAB-US'** पर हर रोज़ सुबह 7 से 7-30 EST

**UK** ✦ **'वीनस' टीवी** पर हर रोज़ सुबह 8 से 8-30 (हिन्दी में)
✦ **'SAB-UK'** पर हर रोज़ सुबह 7-30 से 8 - Western European Time (6.30am-7am GMT)
✦ **'Rishtey-UK'** पर हर रोज़ सुबह 7 से 7-30 Western European Time (6am-6-30am GMT)

**Singapore** ✦ **'SAB- International'** पर हर रोज़ सुबह 8-30 से 9 (हिन्दी में)

**Australia** ✦ **'SAB- International'** पर हर रोज़ सुबह 11-30 से 12 (हिन्दी में)

**New Zealand** ✦ **'SAB- International'** पर हर रोज़ दोपहर 1-30 से 2 (हिन्दी में)

## पूज्य दीपकभाई को देखिए टी.वी. चैनल पर...

**भारत** ✦ **'दूरदर्शन'-नेशनल** पर सोम से शनि सुबह 8-30 से 9, रवि सुबह 6-30 से 7
✦ **'दूरदर्शन'-बिहार** पर हर रोज़ सुबह 7 से 7-30 तथा शाम 6-30 से 7, शुक्र शाम 5 से 5-30 (हिन्दी में)
✦ **'दूरदर्शन'-उत्तरप्रदेश** पर सोम से शनि रात 8-30 से 9 (हिन्दी में)
✦ **'उड़ीसा प्लस' टीवी** पर सुबह 7-30 से 8 (हिन्दी में)
✦ **'दूरदर्शन' गुजरात - गिरनार** पर सोम से शनि दोपहर 3-30 से 4 (गुजराती में)
✦ **'दूरदर्शन' गिरनार** पर हर रोज़ रात 10 से 10-30 (गुजराती में)
✦ **'अरिहंत' चेनल** पर हर रोज़ रात 8 से 9 (गुजराती में)
✦ **'दूरदर्शन'-सह्याद्रि** पर हर रोज़ सुबह 7 से 7-30 (मराठी में)
✦ **'दूरदर्शन'-चंदना** पर सोम और शुक्र रात 7-30 से 8 (कन्नड़ में)

**USA -Canada** ✦ **'Rishtey-USA'** पर हर रोज़ सुबह 7-30 से 8 (हिन्दी में) EST

**UK** ✦ **'वीनस' टीवी** पर हर रोज़ सुबह 8-30 से 9 (गुजराती में)

**CAN-Fiji-NZ-Sing.-SA-UAE** ✦ **Rishtey-Asia'** पर हर रोज़ सुबह 7-30 से 8 (हिन्दी में) UAE Time (9am-9-30am IST)

**USA-UK-Africa-Aus.** ✦ **'आस्था'** (डीश टीवी चेनल 849-युके, 719-युएसए) पर सोम से शुक्र रात 10 से 10-30

Jacksonville Southeast

# GURU PURNIMA 2018

Through the infinite grace of Akram Vignani Param Pujya Dada Bhagwan and the blessings of Atma Gnani Pujya Niruma, all the mahatmas of the South East (USA) have received the great fortune to host the celebration of Gurupurnima for the year 2018. This exceptional occasion is one that brings the experience of bliss beyond the realm of the relative and absolute happiness, for all of us. It is our heartfelt desire that all of you come to the city of Jacksonville, to receive the same divine experience, this year just like every year. On this auspicious occasion, in the form of the living link of Akram Vignan, in the presence of Atma Gnani Pujya Deepakbhai Desai, we would like to extend a warm welcome to you, and all your family and friends, to be a part of the grand celebration of Param Pujya Dada Bhagwan's Gurupurnima.

Jai Sat Chit Anand from all the mahatmas of the South East (USA)

| Date | Spiritual Discourses | Morning Session | Evening Session |
|---|---|---|---|
| July 23 | GP Shibir | 10 am to 12-30 pm | 4-30 to 7 pm |
| July 24 | GP Shibir | 10 am to 12-30 pm | 4-30 to 7 pm |
| July 25 | GP Shibir | 10 am to 12-30 pm | 4-30 to 7 pm |
| July 26 | Aptaputra Satsang | 10 am to 12-30 pm | - |
| | GP Shibir - GNC/General Satsang | - | 4-30 to 7 pm |
| July 27 | GURUPURNIMA | 8 am to 1 pm | 5 to 7 pm |
| July 28 | Aptaputra Satsang | 10 am to 12-30 pm | - |
| | GNANVIDHI | - | 4-30 to 7 pm |

## Satsang Venue

**Hyatt Regency Jacksonville Riverfront, 225 E Coastline Drive Jacksonville, FL 32202**

**Tel.: 1-877-505-DADA(3232) Ext. 10, Email: gp@dadabhagwan.org, Visit: www.dadabhagwan.org**

## आत्मज्ञानी पूज्य दीपकभाई के सानिध्य में आगामी सत्संग कार्यक्रम

## अडालज त्रिमंदिर

**8 जुलाई** (रवि) - **पू. नीरुमा का 50वाँ ज्ञानदिन पूरे विश्वभर के सभी सेन्टरों में मनाया जाएगा**

**26 अगस्त** (रवि) - **रक्षाबंधन के अवसर पर विशेष कार्यक्रम**

**1 सितम्बर** (शनि) शाम 4 से 7 - **सत्संग** तथा **2 सितम्बर** (रवि) सुबह 10 से 12 - **आप्तपुत्र सत्संग**

**2 सितम्बर** (रवि) शाम 4 से 7-30 - **ज्ञानविधि**

**3 सितम्बर** (सोम) - रात 10 से 12 - **जन्माष्टमी के अवसर पर विशेष भक्ति कार्यक्रम**

**5 सितम्बर** (बुध) सुबह 9 बजे से **पूज्यश्री के दर्शन का कार्यक्रम**

**6 से 13 सितम्बर** (गुरु से गुरु) **पर्युषण पारायण - आप्तवाणी 13 ( उ. ) पर सत्संग**

## Pujya Deepakbhai's USA Satsang Schedule 2018

**Contact no. for all centers in USA : 1-877-505-DADA (3232) & email for USA - info@us.dadabhagwan.org**

| Date | Day | City | Session Title | From | To | Venue | Contact No. & E-mail |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 2 Jul | Mon | San Jose, CA | Satsang | 7-00 PM | 9-30 PM | Oasis Palace, 35145 Newark Blvd, Newark, CA 94560 | Extn. 1024 northcalifornia@ us.dadabhagwan.org |
| 3 Jul | Tue | San Jose, CA | Aptaputra Satsang | 10-00 AM | 12-30 PM | | |
| 3 Jul | Tue | San Jose, CA | Gnan Vidhi | 6-00 PM | 9-00 PM | | |
| 7 Jul | Sat | Dallas, TX | Satsang | 5-00 PM | 8-00 PM | DFW Hindu Temple Ekta Mandir , 1605 N Britain Rd Irving, TX 7506, | Extn. 1026 dallas@ us.dadabhagwan.org |
| 8 Jul | Sun | Dallas, TX | Aptaputra Satsang | 10-00 AM | 12-30 PM | | |
| 8 Jul | Sun | Dallas, TX | Gnan Vidhi | 4-00 PM | 8-00 PM | | |
| 10 Jul | Tue | Austin, TX | Aptaputra Satsang | 6-30 PM | 9-30 PM | Live Oak Unitarian Universalist Church , 3315 El Salido Pkwy, Cedar Park, TX 78613 | Extn. 1032 austin@ us.dadabhagwan.org |
| 11 Jul | Wed | Austin, TX | Gnan Vidhi | 6-00 PM | 9-00 PM | | |
| 12 Jul | Thu | Johnston / Des Moines | Aptaputra Satsang | 6-00 PM | 8-30 PM | Goodwill Industries Board Room, 5355 NW 86th St, Johnston (Des Moines), IA 50131 | 1-515-240-3494 ss4family@ hotmail.com |
| 18 Jul | Wed | Columbia, SC | Aptaputra Satsang | 6-30 PM | 9-30 PM | The Medallion Conference Center, 7309 Garners Ferry Rd, Columbia, SC 29209 | Extn. 1035 columbia@ us.dadabhagwan.org |
| 19 Jul | Thu | Columbia, SC | Gnan Vidhi | 6-00 PM | 9-00 PM | | |
| 31 Jul | Tue | Maryland, D.C. | Satsang | 6-30 PM | 9-30 PM | F. Scott Fitzgerald Theatre 603 Edmonston Drive Rockville, MD 20851 | Extn. 1010 mddcva@ us.dadabhagwan.org |
| 1 Aug | Wed | Maryland, D.C. | Aptaputra Satsang | 10-30 AM | 12-30 PM | | |
| 1 Aug | Wed | Maryland, D.C. | Gnan Vidhi | 6-00 PM | 9-00 PM | | |
| 2 Aug | Thu | Maryland, D.C. | Aptaputra Satsang | 6-30 PM | 9-30 PM | | |
| 7 Aug | Tue | New York, NY | Satsang | 6-30 PM | 9-30 PM | NEW YORK GANESH TEMPLE Hindu Temple Community , Center 143-09 Holly Avenue, Flushing, NY 11355 | Extn. 1021 newyork@ us.dadabhagwan.org |
| 8 Aug | Wed | New York, NY | Aptaputra Satsang | 10-30 AM | 12-30 PM | | |
| 8 Aug | Wed | New York, NY | Gnan Vidhi | 6-00 PM | 9-00 PM | | |
| 10 Aug | Fri | New Jersey, NJ | Satsang | 6-30 PM | 9-30 PM | The Hanover Marriott, 1401 Route 10 East, Whippany, NJ 07981 | Extn. 1020 newjerseypennsylvania@ us.dadabhagwan.org |
| 11 Aug | Sat | New Jersey, NJ | Aptaputra Satsang | 10-30 AM | 12-30 PM | | |
| 11 Aug | Sat | New Jersey, NJ | Gnan Vidhi | 5-00 PM | 8-00 PM | | |

जून 2018
वर्ष-13 अंक-8
अखंड क्रमांक - 152

दादावाणी

Date Of Publication On 15th Of Every Month
RNI No. GUJHIN/2005/17258
Reg. No. GAMC - 1500/2018-2020
Valid up to 31-12-2020
LPWP Licence No. PMG/HQ/36/2017
Valid up to 31-12-2020
Posted at AHD. P.S.O. Sorting Office Set - 1
on 15th of each month.

## किसी के प्रति प्रेजुडिस मत रखना

कोई हमसे दग़ा कर जाए तो वह हमें याद नहीं रखना है। अभी वर्तमान में वह क्या कर रहा है, यह देख लेना चाहिए, वर्ना तो 'प्रेजुडिस' कहलाएगा। पिछला याद करने से बहुत नुकसान होता है। उसे ध्यान में रखने से 'प्रेजुडिस' होगा। 'प्रेजुडिस' से तो संसार बिगड़ता है। हमें वीतराग भाव से रहना है। पिछला लक्ष में रहेगा ही लेकिन वह कुछ 'हेल्पिंग' चीज़ नहीं है। अपने कर्म के उदय वैसे थे, इसलिए उसने हमारे साथ वैसा वर्तन किया। उदय अच्छे हैं तो अच्छा वर्तन करेगा। इसलिए 'प्रेजुडिस' मत रखना। आपको क्या मालूम कि जो पहले ठगकर गया था, वह आज नफा करवाने आया है या नहीं? आपको उसके साथ व्यवहार करना हो तो करो और नहीं करना हो तो मत करना परंतु 'प्रेजुडिस' मत रखना। और शायद कभी व्यवहार करने का समय आए तब तो बिल्कुल 'प्रेजुडिस' मत रखना।

– दादाश्री

Printed and Published by Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation - Owner. Printed at Amba Offset, B - 99, GIDC, Sector - 25, Gandhinagar - 382025.